भावभरा आमंत्रण

।। श्री सुरभ्यै नमः ।।

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री की सत् प्रेरणा से

अर्बुदारण्य की पावन भूमि पर सहस्त्रों गोमाताओं के मध्य

मासिक

कामधेनु कल्याण

पत्रिका

जुलाई, 2026 (वर्ष : 03, अंक : 04)

सुरभि हरिहर चातुर्मास

आराधना महोत्सव

वि.सं. 2083, आषाढ़ पूर्णिमा से भाद्रपद पूर्णिमा पर्यन्त

(29 जुलाई से 26 सितम्बर 2026 पर्यन्त)

पावन सान्निध्य

अनंत श्री विभूषित पश्चिमाम्नाय सामवेदीय

द्वारका शारदापीठाधीश्वर

प. पू. जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी

श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज

-:पावन स्थल:-

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

अभिनव ब्रजमंडल मनोरमा गोलोकतीर्थ अर्बुदारण्य नन्दगांव, केसुआ, रेवदर, सिरोही (राज.)

संपर्क सूत्र : 7742093179, 7742093200, 7073000108, 7073000104, 9760635735

Website: www.godhampathmeda.org Email: k.k.p.pathmeda@gmail.com

।। श्री सुरभिहरिहरेभ्यः नमः।।

सुरभि हरिहर चातुर्मास

आराधना महोत्सव

पूज्य साधु–संत–महात्माओं एवं आदरणीय धर्मात्मा गोभक्त सज्जन भाई–बहिनों,
आपको आमंत्रित करते हुए हृदय अत्यंत आनंदित हो रहा है कि **परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री** की सत् प्रेरणा से सहस्त्रों गोमाताओं के मध्य श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा स्थापित तथा संचालित **अभिनव ब्रजमंडल मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगांव अर्बुदारण्य** की पावन धरा पर **29 जुलाई से 26 सितंबर 2026** पर्यंत अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री सदानन्द सरस्वतीजी महाराजजी के पावन सानिध्य में सचल तीर्थ स्वरुप साधु–संतों और नारायण स्वरुप महापुरुषों के नेतृत्व में सुरभि हरिहर चातुर्मास आराधना महोत्सव का दिव्य एवं भव्य आयोजन होना सुनिश्चित हुआ है। इस अवधि में प्रतिदिन – सुरभि हरिहर महापूजा, चरण पादुका पूजन, वेदांत पाठ, संत – प्रवचन, अलौकिक जप, महायज्ञ अनुष्ठान, श्री रामचरित मानस भाव कथा, श्री मद्भागवत ज्ञान कथा, श्री शिवमहापुराण मंगल कथा सहित अनेकों महामंगलकारी कार्यक्रम होंगे।

आप सभी पूज्य साधु – संत – महात्माओं एवं श्रद्धालु गोभक्त सज्जन भाई–बहनों से सादर सप्रेम अनुरोध है कि सुरभि हरिहर चातुर्मास आराधना महोत्सव में सम्मिलित होकर धार्मिक तथा आध्यात्मिक जीवन विकास का अमोघ प्रसाद प्राप्त करें।

निवेदक – श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास परिवार

।। जय गोमाता जय गोपाल – भक्त वत्सल प्रभु दीनदयाल।।

।। वन्दे धेनुमातरम् ।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष : 3

कामधेनु-कल्याण

अंक : 4

आषाढ़ मास कृष्ण पक्ष वि.सं. 2083 रा.शाः 1948 जुलाई –2026

1.	**तीनों लोकों में शरण्या गोमाता हैं** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री	04
2.	**श्री कामधेनु कृपा प्रसाद** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री	06
3.	**संयम, साधना और दिव्य रूपान्तरण का महापर्व 'चातुर्मास'** – संकलित	08
4.	**गावो विश्वस्य मातरः** – संकलित	11
5.	**ठाकुरजी कब आओगे** – भगवत प्रेरणा से	12
6.	**मानव देह की दुर्लभता** – संकलित	15
7.	**श्री मदभागवत कथा** – पूज्य द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज	17
8.	**श्री राम कथा** – पूज्य आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज	20
9.	**श्री शिव महापुराण कथा** – पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज	22
10.	**सनातन धर्म** – अम्बा लाल सुथार, सम्पादक	24
11.	**संस्था समाचार** – जून माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण	26
12.	**नवीन प्रज्ञा परिषद की सूची**	29
13.	**नवीन केन्द्रीय कार्यकारिणी की सूची**	32

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,
त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक
अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क–2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

तीनों लोकों में शरण्या गोमाता है

आपने पिछले आठ दिनों से महाराजश्री से योग संबंधी बाते, इनके योग संबंधी अनुभव सुने होंगे। इनकी बातें आप सबको अच्छी लगी होगी क्योंकि अच्छी बातें थी। आपने पहले भी किसी पुस्तक से, किसी महापुरुष से या अपनी परम्पराओं से ये बातें तो पढ़ी-सुनी ही होगी। जैसे अभी ये भाई साहब बता रहे थे कि पहले भी मैं थोड़ा योग करता था। योग थोड़ा या ज्यादा नहीं होता है। योग तो योग ही होता है। कोई बात नहीं, इनके कहने का भाव यह है कि वे मेहनत तो कर ही रहे थे। क्यों कर रहे थे? क्योंकि उनमें पहले से ही आनुवांशिक संस्कार तो मौजूद ही थे, वे उन्हें प्रेरित कर रहे थे। गीताजी में योगभ्रष्ट साधक के बारे में श्लोक हैं जो स्वामीजी बताया करते थे-

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के छठे अध्याय (आत्मसंयमयोग) में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन के पूछने पर योगभ्रष्ट (वह साधक जो साधना मार्ग से विचलित हो गया हो या जिसकी साधना पूरी होने से पहले मृत्यु हो गई हो) की गति का सुंदर वर्णन किया है।

भगवान श्रीकृष्ण ने अध्याय 6, श्लोक 40 और 41 में स्पष्ट किया है कि कल्याण के मार्ग पर चलने वाले किसी भी व्यक्ति का कभी विनाश नहीं होता।

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
न हि कल्याणेंत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति।।

अर्थ: हे कुन्तीपुत्र! उस योगभ्रष्ट पुरुष का न तो इस लोक में और न ही परलोक में विनाश (नाश) होता है। हे प्यारे मित्र! आत्म-कल्याण (सत्कर्म) के मार्ग पर चलने वाला कोई भी व्यक्ति कभी दुर्गति को प्राप्त नहीं होता है।

प्राप्य पुण्येंतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।।

अर्थः योगभ्रष्ट मनुष्य पुण्यवानों के लोकों (स्वर्ग आदि) को प्राप्त होकर, वहाँ बहुत वर्षो तक निवास करता है। उसके बाद वह पृथ्वी पर शुद्ध आचरण वाले पवित्र और ऐश्वर्यशाली (धनी) पुरुषों के घर में पुनः जन्म लेता है।

भगवान आगे कहते हैं कि यदि साधक और अधिक उन्नत था, तो उसका जन्म साधारण धनी परिवार के बजाय सीधे ज्ञानियों के कुल में होता है:

अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम्

अर्थः अथवा वह पुरुष (जो पहले ही काफी प्रगति कर चुका था) सीधे दिव्य ज्ञान से सम्पन्न बुद्धिमान योगियों के कुल में जन्म लेता है। संसार में इस प्रकार का जन्म मिलना निश्चित रूप से अत्यंत दुर्लभ है। जो योगभ्रष्ट होता है, वह श्रीमती और श्रीमंतों के घरों में जन्म लेता है, वहाँ पूरी सुविधाओं की सारी वस्तुएं, जो तीनों शरीरों के भोग हैं, वो मौजूद रहते हैं। ऐसा सब कुछ होने के बाद भी वो अपने आप उसमें से खींचा जाता है और पूर्व वाला जो अभ्यास अधूरा रह गया था वो उसको खींचकर बलात् लगाता है। यही हैं जिन्हें हम आनुवांशिक संस्कार कहते हैं। हमारे यहाँ पर बड़े-बड़े सम्राट, बड़े-बड़े विद्वान, याज्ञवलक्य को देखा न आपने, तो इस तरह के लोग कैसे निकले और क्षण में निकल गये। इसलिए हम यहाँ जब देखते हैं कि इस तरह के लोग कैसे निकले? हमारे पास में कुछ नहीं है, तो भी हमको हमारे जीवन के लिए, समय नहीं, पता नहीं, समय किसके लिए है? आप जगत के लिए, जगतपति

के लिए कब समय दे पाओगे जो अपने लिये ही समय नहीं है। जो समय, जीवन शक्ति है, वो अपने लिए ही है वो ही नहीं दे सकते तो दूसरों का क्या हित करेंगे? भगवद्‌वाणी कहती है कि जो अपना ही भला नहीं कर सकता है, वो दूसरों का कैसे करेगा? बहुत बड़ा शत्रु बताते है उसे अपने लिये। जो अपने शत्रु हैं, वे समाज और राष्ट्र के शत्रु नहीं होंगे? जिनके पास में जो होगा, वही तो चारों तरफ फैलाएगा। अभी यहाँ बैठे हैं, पता नहीं कैसी जगह पर बैठे हैं? राम जाने, पर पिछले आठ दिनों से हम लोग यहाँ योग क्रिया कर रहे हैं तो यह बड़ा शुद्ध हो रहा है, अच्छा एहसास लग रहा है।

पृथ्वी क्या है? धर्म क्या है? ईश्वर क्या है? जहाँ आप हो, जहाँ आप ठहरे हुए हो, हम सब जहाँ रहते हैं, वही तो हमारा ईश्वर है। यही तो हमको पूर्वजों ने और हमारी परंपरागत संस्कृति ने बताया है। हम सबका जो सच्चा आश्रय है समष्टि प्रकृति और व्यष्टि का, इन शरीरों को आश्रय देने वाला जिसमें हम लीन होते हैं, वह तो ईश्वर ही है। ईश्वर के पास कैसे जाएं? तभी जाएंगे जब पहले अपने पास जाएं. तो हमारी परंपरा में सबसे पहले यह बात बताई कि पहले अपने पास जाओ। अगर आपको देवता की उपासना करनी है तो आपको देव बनना पड़ेगा, नहीं तो आपकी उपासना का कोई फल नहीं मिलेगा। आपकी उपासना औपचारिक हो जाएगी, दिखावटी, बनावटी। क्या बोलते हैं, चित्र लेने वालों को फोटो भेज दिया, हमने ये किया था, वो किया था। ऐसी दिखावटी, बनावटी हो जाएगी।

इसलिए हम अगर किसी भी देव के उपासक हैं, देव के उपासक का अर्थ यह है कि हमारे यहाँ अनेक प्रकार के मत हैं उपासना के, जीवन जीने की कलाओं की अनेक पद्धतियाँ हैं वे अपनी भाषा से, क्षेत्र से, व्यक्ति के कहने की शैली से कुछ-कुछ भिन्न होती हैं, एक नहीं होती। जब तक व्यक्ति का व्यक्तित्व रहता है, तब तक उसका अपना दर्शन उसमें बंधा हुआ रहता है, जबकि सारी हमारी जो उपासना पद्धतियों के दर्शन हैं, उनका लक्ष्य एक ही है, पर उनके पीछे जो दार्शनिक थे, उनका अपना अहम् रहता है, जिसमें उस दर्शन को जिसने खोजा है, देखा है, समझा है, अनुभव किया है, उसका अहम् रहता है तब तक वह दर्शन और पद्धतियाँ, फिलोसॉफी वो अलग-अलग होती हैं। तो ऐसी अनेक फिलोसॉफियों, हमारे यहाँ हैं। मैं उसको कुछ कह नहीं सकता। हमने संतों से सुना है कि-

कित्ते-कित्ते-कित्ते मत! जितने साधक उतने मत।

'मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्ना' एक प्रसिद्ध संस्कृत सूक्ति है जिसका सीधा अर्थ है - जितने सिर (मनुष्य), उतनी ही अलग-अलग सोच या बुद्धियाँ। सरल शब्दों में कहें तो, संसार में जितने भी मनुष्य हैं, उन सभी के विचार, राय और दृष्टिकोण एक-दूसरे से पूरी तरह भिन्न होते हैं। यह सूक्ति वायु पुराण के एक श्लोक का हिस्सा है:

मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना, कुण्डे कुण्डे नवं पयः।
जातौ जातौ नवाचाराः, नवा वाणी मुखे मुखे।।

अर्थात् हर व्यक्ति के सोचने का ढंग और उसकी बुद्धि अलग होती है। हर कुएँ या सरोवर के पानी का स्वाद और गुण अलग होता है। अलग-अलग समाजों, जातियों और संस्कृतियों के रीति-रिवाज भिन्न होते हैं। हर व्यक्ति की बोली, भाषा या किसी बात को व्यक्त करने का तरीका अलग होता है।

मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्ना जितने साधक उतने मत। क्यों? क्योंकि प्रत्येक साधक अलग-अलग क्षेत्र में, प्रदेश में, अपनी परंपरा में रहकर, उस साधना को करता है तो वस्तु एक होते हुए भी अनुभव में अंतर होगा। वह अंतर होते हुए भी वस्तु एक है, दो नहीं। यह इन सभी पद्धतियों का एक बहुत पवित्र लक्ष्य रहा कि भाई, उन सबको मिलाकर हम सनातन संस्कृति या सनातन धर्म अथवा मानव धर्म कहते हैं। मानव धर्म अथवा धर्म शब्द कोई.......लगातार पढ़ते रहें

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

संकट गाय पर नहीं, सनातन धर्म पर है

..... पिछले अंक से आगे

.... 10 वें वर्ष पूरे गाँव की गाएं 15 से 20 लीटर दूध देने वाली हो जायेगी। उनके बछड़े-बछड़ियों फिर लाखों रुपये मूल्य के होंगे। जिस प्रकार पाडी और घोड़ी को सूनी नहीं छोड़ते ऐसे ही फिर गाय को भी कोई सूनी नहीं छोड़ेंगे, यह सब आपके हाथों में है। भारत की सरकारें यह काम नहीं करेगी भारत की सरकार यह काम नहीं करेगी क्योंकि भारत की सरकार भारत की सरकार है ही नहीं। अगर भारत की सरकार भारत की होती तो हमारे इतिहास को देखती, हमारी आस्तिक निधियों को देखती, जिसके द्वारा दीर्घ काल तक यह देश स्वतंत्र रहा, सुरक्षित रहा, स्वस्थ रहा ज्ञान में धन में, शौर्य में, धैर्य में, बुद्धि में सबसे श्रेष्ठ रहा और सोने की चिड़िया एवं जगत का गुरु रहा। उस इतिहास को देखते नहीं। वे अमेरिका से ढूंढते हैं, रूस से ढूंढते हैं, चीन से ढूंढते है लेकिन भारत में उनको कुछ नहीं दिखता। भारत की परंपराओं को अपनाते नहीं, केवल वोट लेने के लिए ही भारत की बात करते हैं ताकि सरकार बन जाए। भारत की सारी नदियों अवरोधित कर दी, दूषित कर दी, भारत की सब गोभूमियों नष्ट कर दी, भारत के पहाड़ों को तोड़ दिया, गोचर भूमियों नष्ट कर दी, भारत का गोधन नष्ट कर दिया फिर कैसे भारतीय हैं ये? जो मुगल, पठान और अंग्रेज शताब्दियों तक नहीं कर पाये वो नुकसान इन्होंने 7 दशकों में 70 वर्षो में कर दिया, फिर कैसे भारतीय हैं ये। गोचर भूमियें जो सहस्त्राबदियों से सुरक्षित थी जो इन्होंने नष्ट कर दी। ये सारी चीजें इन दिनों में हुई।

खैर, हमें करना है गोसंरक्षण, गोसंवर्धन, गोचर विकास, गोआधारित कृषि, घर-घर में पूज्यभाव से गोपालन और गीता, भागवत व रामायण का स्वाध्याय, बस इतना करना है। यह पांच सूत्री कार्यक्रम है इसे हम कर देंगे तो पास वाला गाँव हमको देखकर करेगा। कहना नहीं पड़ेगा, अपने आप करेंगे। लाभ होता देखेंगे तो लोग उसको करेंगे। अभी तो लाभ नहीं है, खर्चा है। महाराज आ रहे हैं, गोशाला खोलनी पड़ेगी, गायों के चारा का चंदा देना पड़ेगा, लेकिन जब गाएं पैसा देने लगेगी तब लोग आपके पास आयेंगे कि गाय दे दो। दूध वाली नहीं है तो बिना दूध वाली दे दो, हमें तो गोबर चाहिये। गाय के गोबर और गोमूत्र ये ऐसी चीजें हैं कि बहुत निकट समय में देखना ये दूध और सब इनके सामने कुछ नहीं, इतने मूल्यवान होंगे गोबर और गोमूत्र। आज देश ही नहीं सारी दुनिया समझ गई है कि ये कीटनाशक इतने जहरीले हैं। इसलिये इन सबको जैविक खेती चाहिये, जैविक अन्न चाहिये। जैविक का मतलब यह नहीं कि मरे पशुओं का मांस सड़ाकर, भैंसों का पोटा और सूअरों का मल क्या बोलते हैं उसको मुर्गे की विष्टा और मरे हुए पशुओं की आंत मिलाकर सेन्द्रिय खाद बनाकर देते जैविक खाद के नाम से देते हैं। यह तामसिक है, जैविक होगा लेकिन सात्विक नहीं है। केवल गाय का गोमय ही सात्विक जैविक खाद है। उससे उत्पादित अन्न का नाम ही गोकृषि अन्न है। गोकृषि अन्न और गोदुग्धान्न ये दोनों सात्विक आहार है।

माताएं विराज रही हैं, सभी भाई भी विराज रहे हैं। माताओं का काम घर में गोपालन और भाइयों का काम खेत में गोकृषि अन्न उगाना। दोनों का कार्य अलग-अलग है और दोनों का कार्य एक दूसरे का पूरक है। माताओं और भाइयों दोनों से हमारी प्रार्थना है कि आप अपना, अपने परिवार का और अपनी

आने वाली पीढ़ी का भला चाहते हो तो अपने परिवार को जहर मत खिलाओ, भोजन में गाय का दूध, दही, घी खिलाओ। गाय के गोबर से उत्पादित अन्न अपनी रसोई में भेजो भाइयों और घर में सुबह और शाम को गाय के घी से दीपक और धूप करो वो ऑक्सीजन प्रकट करेगा और रोगाणुओं व विषाणुओं को नष्ट करेगा। गाय के गोमूत्र में साक्षात् गंगाजी का निवास है और गंगाजी दूषित हो सकती है, पर गोमूत्र दूषित नहीं हो सकता।

एक जना आया और उसके साथी बोले कि इसको भूत लग गया है तो हमने कहा हम तो भूत भावन (शिवजी) को जानते हैं, भूत को नहीं जानते। गोमूत्र निकालो और इस पर डालो। उसके साथियों ने ऐसा ही किया और हमने कहा अब भूत गया। तो भी गया नहीं। तो हमने कहा तू झूठ बोल रहा है, तेरे भूत नहीं है। अगर भूत होता, तो गोमूत्र से चला जाता। अब तेरा पता लग गया है, तू झूठ बोल रहा है। थोड़ी देर में उसने सच्चाई बताई। बात समझ में आ गई। भूत नहीं लगा, मेरे घर में ये परेशानी है, इसलिए मैं परेशान रहता हूँ। तो गोमूत्र से भूत चला जाता है। गाय की जिसके घर में पूज्य भाव से सेवा होती है, वहाँ भूतप्रेत के दोष नहीं आते। कई लोग तो कहते हैं कि गाय के कुछ हो गया, देवता ने दो कर दिया। गाय को दो कौन कर सकता है, बताओ? ऐसे लोग आ जाते हैं। अरे भाई, गाय की आपने इष्ट रूप में देखा नहीं, पशु के रूप में देखोगे तो दो होगा ही। गाय साक्षात् भगवान का रूप है। गाय का गोष्ठ साफ रखो, वहाँ पर जूता पहन कर मत जाओ, थूको मत, चमड़े की जूती पहन के मत जाओ और जैसे मंदिर साफ होता है, ऐसे गाय के रहने की जगह साफ होनी चाहिए. तो वो भूमि तीर्थो से भी पवित्र हो जाती है। शाम-सुबह उस रज को मस्तक पर लगाने से कई पाप धुल जाते हैं. इसलिए घर में गोपालन करो तो पुण्य भाव से करो। घर में गोपालन करो तो पूज्य भाव से करो। गाली-गलौज मत करो गाय के साथ में। गाय को मारते हैं, गाली-गलौज करते हैं, बांधी हुई रखते हैं, भैंस का जूठा खिला देते हैं, अपराध करते हैं। देवता को पूजना हो, तो बच्चों को कहते हैं कि महादेव जी को भोग लगना है, ध्यान रखना, कुछ चीज जूठा न हो और गाय में तो महादेवजी, विष्णुजी, ब्रह्माजी, गणेशजी, भगवान, सब गाय में विराजे, सब भोग ले रहे हैं, उनके मुख से तैंतीस कोटि देव प्रसाद ले रहे हैं और आप जूठा देते हो, भैंसों का जूठा दे देते हो, वो अपराध है। उनको गाली देना, हल्के शब्द बोलना गोमाता के लिए, वो अपराध है। धूप में बांधे रखना, बरसात में धुआं न करना, मक्खी मच्छर न उड़ाना, ये गो अपराध है, इन गो अपराधों से गोमाता तो कुछ नहीं कहती, पर गोमाता में विराजी हुई जो देवी शक्तियाँ हैं, ऋषि शक्तियाँ हैं, हमारे पूर्वज भी गो दर्शन करने आते हैं गो में, वो गाय का अपमान, तिरस्कार देखकर प्रकोपित हो गए, उनका श्राप लगता है। इस कारण घर में गाय होते हुए भी लोग दुखी होते हैं, क्योंकि वो गो अपराध कर रहे हैं। पूज्य भावना से गो का पालन करो, घर में कोई कमी नहीं रहेगी. सब तरह के विघ्न दूर हो जाएंगे और समृद्धि, कीर्ति, यश, आरोग्य, और संतति ये सब गोमाता प्रदान करती है।

आप तो सभी गोभक्त हैं, गोसेवक हैं और धर्मात्मा किसान अन्नदाता हैं। यह बात हमारे मन में आई थी कि हम आसपास के गांवों में प्रार्थना करें और गांव स्तर बढ़ें, इसके लिए सौ गांव की कल्पना है. आप उनके साथ जुड़ेंगे. इस अपेक्षा से हम आपकी गाँव में निवेदन करने आएं हैं, जो बातें हमने कही हैं, जो आपके काम में आ सकती हैं, आपके हित की है, उसको आप अपने काम में लेंगे. इस अपेक्षा और सद्भावना के साथ इस वाणी को गोमाता के चरणों में अर्पित करते हैं, और पूज्य संतों को प्रणाम, और आप सब को सादर हरिस्मरण, जय गोमाता, जय गोपाल।

साधना, संयम और दिव्य रूपांतरण का महापर्व - चातुर्मास

(संकलित)

प्रस्तावनाः सनातन संस्कृति का प्राण- 'चातुर्मास'

हिंदू सनातन संस्कृति केवल पर्वो और उत्सवों का समुच्चय नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन को उत्तरोत्तर देवत्व, मोक्ष और भगवत्प्रेम की ओर ले जाने वाली एक पूर्ण वैज्ञानिक और आध्यात्मिक जीवन पद्धति है। इस पद्धति का सबसे प्रखर और ऊर्जावान कालखंड 'चातुर्मास' और नवरात्रि है। इस अंक में हम चातुर्मास के संबंध में कुछ चर्चा करते हैं।

'चातुर्मास' 'दो शब्दों चतुः' और 'मास' की संधि से बना है। चतुः का मतलब चार और मास का मतलब महिने होता है, अर्थात चार महीने का काल खण्ड। आषाढ़ शुक्ल एकादशी (देवशयनी एकादशी) से प्रारंभ होकर कार्तिक शुक्ल एकादशी (देव प्रबोधनी एकादशी) तक के इस चार मास के समय को सनातन धर्म में तपस्या, व्रत और आत्म-कल्याण के लिए चातुर्मास के रूप में आरक्षित किया गया है। यह वह दिव्य समय है जब संपूर्ण चराचर जगत के स्वामी भगवान श्रीहरि विष्णु क्षीरसागर में योगनिद्रा में लीन होते हैं। पद्म पुराण में इस काल की महिमा गाते हुए कहा गया है-

चातुर्मास्ये तु सम्प्राप्ते यस्तु धर्मं न चरति।
स जीवन्नेव मृतको ज्ञेयः पापमतिर्नरः।।

अर्थात, चातुर्मास के आने पर जो मनुष्य धर्म का आचरण नहीं करता, वह पापमय बुद्धि वाला मनुष्य जीवित होते हुए भी मृत समान ही है।

चातुर्मास का प्राकट्यः क्यों और कब आरंभ हुआ?

चातुर्मास कब आरम्भ हुआ, वामन अवतार से पहले का कहीं कोई प्रमाण नहीं मिला, लेकिन यह प्रथा अनादिकाल से चली आ रही है। चातुर्मास आरम्भ होने की पृष्ठभूमि में मुख्यतया दो कारण मिलते हैं:-

1.*पौराणिक एवं शास्त्रीय पृष्ठभूमि*- पौराणिक आख्यानों के अनुसार, जब भगवान विष्णु ने वामन अवतार लेकर दैत्यराज बलि के अहंकार को नष्ट किया और तीन पग में तीनों लोक नाप लिए, तब राजा बलि की दानशीलता और भक्ति से प्रसन्न होकर प्रभु वामन ने उसे वर मांगने को कहा। बलि ने प्रार्थना की कि प्रभु सर्वदा मेरे पाताल लोक के महल में निवास करें। भक्तवत्सल भगवान वामन (विष्णु) ने बलि के इस वचन को सहर्ष स्वीकार कर लिया लेकिन माता लक्ष्मी के आग्रह और जगत के संतुलन को बनाए रखने के लिए, भगवान विष्णु ने बलि को वरदान दिया कि वे प्रतिवर्ष आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक चार माह पाताल लोक में निवास करेंगे।

शास्त्रों के अनुसार, देव शयनी एकादशी को जब भगवान विष्णु क्षीरसागर में शयन के लिए जाते हैं, तब साधक इस मंत्र से प्रभु की स्तुति करते हुए स्वयं व्रत का संकल्प लेता है:

सुप्ते त्वयि जगन्नाथ जगत् सुप्तं भवेदिदम्।
विबुद्धे त्वयि बुद्धं च प्रसन्नं मे भवेदुध ।।

अर्थात्: हे जगन्नाथ! आपके सो जाने पर यह संपूर्ण जगत सुप्त हो जाता है और आपके जाग जाने पर पूरा संसार चैतन्यमय होकर प्रसन्न हो जाता है।

2. *भौगोलिक एवं वैज्ञानिक रहस्यः* सनातन धर्म का प्रत्येक नियम प्रकृति के अनुकूल है। चातुर्मास का आरंभ वर्षा ॠतु के आगमन के साथ होता है। इस काल में सूर्य दक्षिणायन होते हैं, जिससे पृथ्वी पर सौर ऊर्जा कम हो जाती है। सूर्य की किरणें मंद होने

के कारण मनुष्यों की जठराग्नि (पाचन शक्ति) अत्यंत शिथिल पड़ जाती है। वर्षा के कारण वातावरण में नमी बढ़ती है, जिससे सूक्ष्म जीवाणु, कीड़े-मकोड़े, जहरीले जीव जन्तु और बैक्टीरिया तीव्र गति से पनपते हैं। प्राचीन काल में हमारे तत्वदर्शी ऋषियों ने संन्यासियों और साधकों के लिए एक स्थान पर रुकने (चातुर्मास प्रवास) का नियम बनाया, ताकि पैदल चलने से हमारे पैरों तले दबकर इन नन्हे जीवों की हिंसा न हो और स्वयं भी किसी जहरीले जीव-जन्तुओं का शिकार न हो।

ऋषियों ने इस काल को 'शारीरिक शुद्धि और मानसिक शांति' का आधार बनाया, ताकि कम भोजन और अधिक भजन से शरीर और अंतकरण निरोगी रहे।

चातुर्मास के अचूक नियम और व्रत व्यवस्था:

स्कंद पुराण और पद्म पुराण के अनुसार, चातुर्मास के दौरान मनुष्यों को त्रिविध नियमों का पालन करना अनिवार्य है।

1. आहार-विहार का संयम (मासानुसार त्याग)- चातुर्मास में भोजन की शुद्धि पर सबसे अधिक बल दिया गया है, क्योंकि 'जैसा खाए अन्न, वैसा होवे मन'। शास्त्रों में चार महीनों के लिए निम्नप्रकार से स्पष्ट निषेध बताए गए हैं:

श्रावणे वर्जयेच्छाकं भाद्रपदे दधि।
आश्विने दुग्धमित्याहुः कार्तिके द्विदलं त्यजेत्।।

प्रथम मास (श्रावण): हरी पत्तेदार सब्जियों (शाक) का त्याग। (आयुर्वेदिक कारण: इस मौसम में पत्तों में कीड़े और पित्त बढ़ाने वाले तत्व होते हैं)।

द्वितीय मास (भाद्रपद): दही, छाछ का त्याग। (आयुर्वेदिक कारण: भाद्रपद में वात रोग की अधिकता होती है, दही का सेवन हानिकारक है)।

तृतीय मास (आश्विन): दूध का पूर्ण त्याग। (आयुर्वेदिक कारण: इस समय पाचन शक्ति कमजोर होती है। दूध भारी और ठण्डा और कफ कारक होता है। अपच, गैस, कफ जैसी समस्याओं से बचने के लिये दूध का इस माह त्याग किया जाता है।

चतुर्थ मास (कार्तिक): द्विदलन अर्थात दालें (विशेषकर उड़द, चना, मसूर) और तेल व तामसिक खाद्य पदार्थो का त्याग। (आयुर्वेदिक कारण: कार्तिक मास में मौसम ठंडा होने लगता है। इस समय पाचन शक्ति (अग्नि) धीरे-धीरे बदलती है। दालें (खासकर भारी दालें जैसे उड़द, चना, मसूर) गैस और अपच कर सकती हैं। तेल और तामसिक भोजन शरीर में कफ और अम्लता बढ़ा सकता है।)

2. शारीरिक और जीवनशैली के कड़े नियम-

भूमि शयन: विलासिता के बिस्तरों का त्याग कर भूमि पर शयन करना चाहिए, जिससे रीढ़ की हड्डी स्वस्थ रहती है और अहंकार का शमन होता है।

पूर्ण ब्रह्मचर्य: मन, वचन और कर्म से पवित्रता बनाए रखना अनिवार्य है। चातुर्मास अवधि में ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य है।

सादा सात्विक भोजन: चातुर्मास अवधि में बिना मिर्च मसाले का सात्विक भोजन करना चाहिये। जीभ को जो स्वाद की आदत पड़ी हुई है उससे छुटकारा पाने का प्रयास करना चाहिये।

एक समय भोजन: इस अवधि में एक समय ही भोजन करना चाहिये और सूर्यास्त के बाद कदापि भोजन न करें क्योंकि चातुर्मास में असंख्य कीट-पतंगे उड़ते रहते हैं और हमारे भोजन में गिर जाते हैं।

मौन और परनिंदा का त्याग: चातुर्मास में मौन रहने की विशेष महिमा है। परनिंदा महापाप मानी गई है। श्री रामचरितमानस में तुलसीदास जी सचेत करते हैं- *पर सुख उपजहिं जे पर निंदा। जे जेहि हरि हर विमुख संत अनुकंपा।। ते नर खर सम जानहु भ्राता। पर द्रोही जन जनमत माता।।*

अर्थात् जो लोग दूसरों की निंदा (बुराई) करने में ही सुख का अनुभव करते हैं और जो भगवान विष्णु (हरि), भगवान शिव (हर) तथा संतों की कृपा (अनुकंपा) से विमुख रहते हैं, हे भाई! ऐसे मनुष्यों को गधे (खर) के समान समझना चाहिए। दूसरों से

द्रोह (बैर) करने वाले ऐसे दुष्ट लोगों का जन्म लेना केवल अपनी माता को कष्ट देने के समान ही है। *परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा। पर निंदा सम अघ न गरीसा।।* वेदों में अहिंसा को परम धर्म माना है और परनिंदा के समान भारी कोई पाप नहीं है।

सब कै निंदा जे जड़ करहीं। ते चमगादुर होइ अवतरहीं।। अर्थात् जो मूर्ख मनुष्य सबकी निंदा करते हैं, वे चमगादड़ होकर जन्म लेते हैं।

3. गोसेवा करना : सेवा से शरीर के अहंकार का नाश होता है। गोसेवा से अहंकार भी जाता है और भगवद प्रेम प्राप्ति भी होती है। चातुर्मास अवधि में अपने हाथों से किसी गोशाला में या अपने गाँव में निराश्रित गोवंश की सेवा करें। मानव कल्याण के दो साधन सबसे सरल और सुलभ है- एक गोसेवा और दूसरा हरि स्मरण। जो मनुष्य 84 के चक्कर से मुक्त होना चाहता है और प्रेम प्राप्त करना चाहता है उसे रात-दिन इनमें लगे रहना चाहिये।

गौसेवा हरि सुमिरना, दोऊ सुलभ सुजान।
मानव जीवन का लहहिं, परम कल्यान निधान।।

भावार्थ: गौमाता की सेवा और भगवान हरि का नाम-स्मरण, ये दोनों ही सबसे आसान और सुलभ साधन हैं। इन्हें अपनाने से मानव जीवन अपने परम कल्याण मोक्ष/सुख को प्राप्त कर लेता है।

गौसेवा अरु हरि के नामा। दोउ सुलभ कल्यान ललामा।। करइ जो जन मन लाई भाई। भव सागर सो सहजहिं जाई।। भावार्थ: गौमाता की सेवा और भगवान हरि का नाम, ये दोनों ही कल्याण करने वाले सबसे सुंदर और सुलभ साधन हैं। हे भाई! जो भी मनुष्य मन लगाकर इन दोनों को अपने जीवन में उतारता है, वह इस संसार रूपी कठिन सागर को बहुत ही आसानी से पार कर जाता है।

4. आघ्यामिक उत्थान : चातुर्मास अवधि में सत्संग, स्वाध्याय, गुरु देवताओं के पूजन, गोदान, सत्यभाषण और नाम जप अत्यन्त कल्याणकारी और पुण्यदायी बताया गया है।इस अवधि में विवाह, मुंडन, यज्ञोपवीत और गृह प्रवेश जैसे सकाम मांगलिक कार्य वर्जित होते हैं, इसलिए मनुष्य के पास अपनी आत्मा से जुड़ने का भरपूर समय होता है। स्कंद पुराण के अनुसार:

सत्संगे द्विजभक्तिश्च गुरुदेवाग्नितर्पणम्।
गोप्रदानं वेदपाठः सत्क्रिया सत्यभाषणम्।।
गोभक्तिर्दानभक्तिश्च सदा धर्मस्य साधनम्।
कृष्णे सुप्ते विशेषेण नियमोऽपि महाफलः।।

अर्थात्: चातुर्मास में सत्संग, संतों की भक्ति, गुरु और देवताओं का पूजन, गोदान, वेदपाठ, सत्यभाषण और गोसेवा ही सबसे बड़े धर्म के साधन हैं। भगवान विष्णु के योगनिद्रा में होने के दौरान इन नियमों का पालन करने से व्यक्ति को विशेष और महान फल प्राप्त होता है। इन चार महीनों में प्रतिदिन महामंत्र या आप जिस नाम का जाप करते है हमेशा उसका जाप करना चाहिए। महामंत्र-

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।

पद्म पुराण में वर्णित है कि चातुर्मास में किया गया थोड़ा सा भी जप, दान, और स्वाध्याय अक्षय (जिसका कभी क्षय न हो) हो जाता है। जो साधक इस काल में श्रीमद्भागवत, श्री रामचरितमानस गीता या भक्तमाल की कथा का श्रवण करता है, वह सीधे वैकुंठ धाम का अधिकारी बनता है।

चातुर्मास आत्म-साधना का एक स्वर्णिम अवसर है। यह काल हमें सिखाता है कि अपनी अनियंत्रित इच्छाओं पर लगाम कैसे लगाई जाए। एक सनातन धर्मी को चातुर्मास में अपने अंतःकरण रूपी खेत में भक्ति का बीज बोना चाहिए। आइए, इस पावन चातुर्मास में हम सब मिलकर संकल्प लें कि हम वासना से उपासना की ओर, प्रमाद से प्रकाश की ओर तथा संसार से सरकार (प्रभु) की ओर बढ़ेंगे। संयमित आहार, निरंतर भजन और पूज्य भाव से अटूट गोसेवा ही इस चातुर्मास व्रत का वास्तविक मर्म है।

गावो विश्वसय मातरः

(संकलित)

प्राचीन काल से नीति और सदाचार की बातें सिखाने वाले ग्रन्थों (जिन्हें सुभाषित या नीतिशास्त्र कहा जाता है) में गोमाता के लिये इस प्रकार कहा गया है :-

भुक्त्वा तृणानि शुष्कानि पीत्वा तोयं जलाशयात्।
दुग्धं ददति लोकेभ्यो गावो विश्वस्य मातरः।।

अर्थात् जो गौएँ (गाय) सूखे तिनके (घास) खाकर और जलाशयों (तालाब या नदी) का पानी पीकर भी मनुष्य को अपना (अमृत रूपी) दूध देती हैं, वे गौएँ सचमुच संपूर्ण संसार की माताएँ हैं।

इसका गहरा भाव यह है कि गाय हमसे बहुत कम (सूखी घास और पानी जैसी साधारण चीजें) लेती है, लेकिन बदले में हमें दूध, दही और घी जैसे अमृत देकर पोषण देती है। वह बिना किसी स्वार्थ के केवल दूसरों का भला करती है, ठीक वैसे ही जैसे एक माँ खुद कष्ट सहकर भी अपने बच्चों को पालती है। इसीलिए उसे *विश्व की माता* का दर्जा दिया गया है।

महाभारत के अनुशासन पर्व में आया है :-

मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः।
वृद्धिक्षयविहीनाश्च गावः सन्तु ममाग्रतः।।

अर्थात् गौएँ (गाय) संसार के सभी प्राणियों की माता हैं और सब प्रकार का सुख देने वाली हैं। वे कभी नष्ट न होने वाले ऐश्वर्य (समृद्धि) का मूल हैं। ऐसी कल्याणकारी गोमाता सदैव मेरे आगे (सामने) रहें। गौमाता की सेवा भगवत्प्राप्ति के साधनों में से एक है। गौदुग्ध का सेवन करना भी गोसेवा है। जब गाय का दूध हमारा आवश्यक आहार हो जायेगा, तब उसकी आपूर्ति के लिए गो-पालन तथा गो-संरक्षण की आवश्यकता होगी।

"गवोपनिषद्" में से दैनिक जप के संस्कृत मन्त्र (महर्षि वसिष्ठ द्वारा उपदिष्ट)

घृतक्षीरप्रदा गावो घृतयोन्यो घृतोद्भवाः।
घृतनद्यो घृतावर्तास्ता मे सन्तु सदा गृहे।।
घृतं मे हृदये नित्यं घृतं नाभ्यां प्रतिष्ठितं।
घृतं सर्वेषु गात्रेषु घृतं मे मनसि स्थितं।।
गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च।
गावो मे सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहं।।

घी और दूध देने वाली, घी की उत्पत्ति का स्थान, घी को प्रकट करने वाली, घी की नदी तथा घी की भंवर रूप गौएं मेरे घर में सदा निवास करें। गौ का घी मेरे हृदय में सदा स्थित रहे। घी मेरी नाभि में प्रतिष्ठित हो। घी मेरे सम्पूर्ण अंगों में व्याप्त रहे और घी मेरे मन में स्थित हो। गौएं मेरे आगे रहें। गौएं मेरे पीछे भी रहें। गौएं मेरे चारों ओर रहें और मैं गौओं के बीच में निवास करूं।

गौमाता की दैनिक प्रार्थना का मन्त्र (महर्षि वसिष्ठ द्वारा उपदिष्ट)

सुरूपा बहुरूपाश्च विश्वरूपाश्च मातरः।
गावो मामुपतिष्ठन्तामिति नित्यं प्रकीर्तयेत्।।

प्रतिदिन यह प्रार्थना करनी चाहिये कि सुन्दर एवं अनेक प्रकार के रूप-रंग वाली विश्वरूपिणी गोमाताएं सदा मेरे निकट आयें।

गोमाता को परमात्मा का साक्षात् विग्रह जान कर उनको प्रणाम करने का मन्त्र (महर्षि वसिष्ठ द्वारा उपदिष्ट)

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजङ्गमं।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरं।।

जिसने समस्त चराचर जगत् को व्याप्त कर रखा है, उस भूत और भविष्य की जननी गोमाता को मैं मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूं।

सनातन धर्म में जिसे विश्व की माता माना गया है, उसको ये सरकारें राष्ट्रमाता का दर्जा कब देगी?

ठाकुरजी कब आओगे

(भगवत प्रेरणा से)

..........पिछले अंक से आगे

...... महाराज जी जब अजमेर पहुँचे तब स्वामीजी का राजस्थान के अकाल पीड़ित गोवंश के संबंध में ही प्रवचन चल रहा था। स्वामीजी बता रहे थे कि इस वर्ष राजस्थान में भयंकर अकाल पड़ गया है इससे यहाँ का गोवंश अत्यंत पीड़ित हो रहा है। कुछ धर्मात्माओं द्वारा अकाल पीड़ित गोवंश को बचाने का प्रयास किया जा रहा है। उसके लिए बीकानेर नाल में बहुत बड़ा अकाल राहत शिविर लगया है जहाँ अकाल पीड़ित हजारों गोवंश एकत्रित हुआ है। यह सुनकर महाराजश्री व्यथित हो गए और महाराज जी ने बीकानेर जाने का विचार किया। महाराज जी ने सोचा कि एक बार वहाँ जायेंगे और स्वामीजी से बाद में गर्मियों में मिल लेंगे। पिछले 5 साल से मिलने की इच्छा थी, फिर 2 साल आगे और नहीं मिल पाये।

महाराज जी ने सत्संग सुना नहीं, स्वामीजी को दण्डवत किया और उस दिन गौरी कुण्ड आ गये। महाराज जी को देखकर महंत भोलादास जी बड़े दुःखी हुए कि कुछ वर्षो पूर्व कौमार्य से परिपूर्ण एक किशोर आज अस्थि पिंजर बन गया है। उन्होंने कहा बालक भगवान अब कहीं मत जाना यहीं रहना। महाराज जी बोले- ठीक है बाबा जैसी सतगुरु भगवान की आज्ञा होगी वैसा करेंगे, आप निश्चिन्त रहिए परंतु इस समय हमको एक बहुत बड़ा कष्ट हो रहा है वो यह कि हमने सुना है कि इस वर्ष अकाल से राजस्थान में गोवंश बहुत पीड़ित है। बाबा ने कहा यहाँ माताजी की गोमाताओं भी पूरा चारा नहीं मिलने से थक गई है। महाराज जी के तीन दिन गौरी कुण्ड में निवास पश्चात अंतर्यामी सतगुरु भगवान से प्रेरणा प्राप्त हुई कि बीकानेर गोसेवा शिविर का निरीक्षण करते हुए जननी के दर्शनार्थ जन्मभूमि जाइए। इसलिये महाराज श्री ने गौरी कुण्ड महंत भोलादासजी बाबा से चलने की अनुमति मांगी। बाबा व्याकुल होकर रोने लगे। महाराज जी ने कहा- सतगुरु भगवान की आज्ञा है, इस समय हमको जाना पड़ेगा फिर वापस आयेंगे। बाबा नीचे तक साथ आए। एक किसान का ट्रेक्टर मंगवाकर सराधना गांव में बस स्टेशन पर छोड़ने का कहा। महाराज जी सराधना से बस द्वारा पुनः दोलतबाग आए। यहाँ पर एक संत (साधक नारायण जी) के माध्यम से बीकानेर जाने की व्यवस्था हो गई। दो दिन बाद नाल हवाई हड्डा के पास स्थित गोसेवा शिविर पहुँच गए। इस शिविर को भागीरथ राठी देख रहे थे। यहाँ पर सीमा के सभी किसान, गोपालक अपनी-अपनी गायें लेकर आ गये थे और उनको गीताप्रेस और गीताप्रेस से जुड़े लोग तथा और भी बहुत सारे गोभक्त चारा, पानी, दवाई आदि दे रहे थे। उस समय वहाँ 30-35 हजार गायें और बैल थे। एक सप्ताह उस शिविर में पीड़ित गोवंश की सेवाओं में शारीरिक सहयोग किया।

वहाँ से फिर महाराज जी 7 दिन तक रुककर सीमा के किनारे-किनारे कभी वाहन से कभी पैदल चले। महाराज जी ने कई जगह देखा कि गायें बैठी-बैठी मर गयी क्योंकि पानी मिला नहीं, चारा मिला नहीं और भूख-प्यास से वहीं बैठी-बैठी सूख गई। महाराज जी वहाँ से चले तब कुछ गायें जीवित भी बैठी थी पर उनके पास कोई मनुष्य चारा-पानी डालने वाला नहीं था। यह जो खेजड़ी का पेड़ है, इसके पत्ते गाय के लिये अच्छे होते हैं। उस समय नागौर, जैसलमेर व बाड़मेर में, कहीं पर भी किसी भी खेजड़ी के पत्ते नहीं थे। किसी-किसी के, जहाँ विश्नोई लोग रहते हैं, उनके खेतों में थे। तो फिर महाराज जी वहाँ जाते, अकेले ही थे। वहाँ जाते तो पहले भिक्षा माँगते। महाराज जी उस समय

केवल गाय की छाछ ही लेते थे। तो कहते छाछ दे दो तो विश्नोई माताएँ पहले पूछती थी कि कहाँ से आये हो बाबा, फलाना-ढिंकड़ा आदि फिर वे छाछ दे देती थी। फिर महाराज जी कहते कि मैया आपके यहाँ उधर हमने देखा है कुछ गायें भूख मर रही हैं, आपके खेत में यह जो खेजड़ी है, नाराज न होवें तो हम थोड़ा ले जाते हैं। वो कहती हमारे घर पर देखो यह खड़ी है इसको डालना पड़ता है। महाराज जी कहते मेरे को जैसे भिक्षा में छाछ दी है ऐसे थोड़ा दे दो। तो विश्नोइयों के खेतों में सुरक्षित होती थी खेजड़ी वो ले जाकर डालते। एक जगह सुबह-सुबह गये वहाँ पेड़ बहुत ऊँचा था। महाराज जी ऊपर से फिसल गये, हाथ फिसल गया और पाँव भी फिसल गये। पकड़ने को कोई आधार तो था नहीं, खेजड़ी से पूरा शरीर छिल गया। खून तो ज्यादा आया नहीं, पर काफी लगी।

तब महाराज जी के मन में यह भाव आया कि इसके लिए एक ऐसा कोई आदर्श काम होना चाहिये। लोगों को कह दिया जाये कि दुश्काल के समय गायें जहाँ भूखी-प्यासी हो कम से कम आप उनको अमुक स्थान पर पहुँचा दो, वहाँ पहुँचाने के बाद गायों की सेवा होगी। तो महाराज जी ने कई लोगों से बात की। लोग बोले कि नहीं-नहीं यह नहीं हो सकता।1988 में बारिश हो गई। 1989 की गर्मियों में महाराज जी गीता भवन, ऋषिकेष चले गये। 1987 में अजमेर में स्वामीजी से मिलने का भाव था, पर फिर दो साल बाद 1989 में ऋषिकेष में स्वामीजी से मिलना हुआ। दूसरी बार भी अच्छी बारिश हुई। अब देखिये 1990 में कहीं चातुर्मास हुआ वहाँ भी महाराज जी ने फिर यही बात कही कि ऐसी कोई न कोई व्यवस्था इन सीमान्त क्षेत्रों में होनी चाहिये, जिससे दुश्काल के समय गायों को, जितनी भी गायें हो, उनको आश्रय दे सकें। छाया हो, पानी हो तो चारा आयेगा। कोई जगह नक्की हो तो कहीं न कहीं से ला तो सके। उस समय महाराज जी घूमे तो पता चला कि कहाँ-कहाँ और किस-किस हालत में पड़ी हैं गायें। कोई धोरे के पीछे उधर बैठी, कोई कहीं बैठी, कोई जाने के लिए रास्ता तो था ही नहीं वहाँ पर। तो वो बात कहीं सफल नहीं हो पायी। जिससे भी बात करते वो बोलते- नहीं-नहीं इसमें तो महाराज जी खर्चा ही खर्चा है, झंझट ही झंझट है। तो महाराज जी ने भी सोचा कि सब कह रहे हैं झंझट है, तो चलो प्रभु की व्यवस्था है, उसको करना होगा तब करेगा। महाराज जी ने भी बात छोड़ दी। 1991 में आपश्री ने मन से यह बात निकाल दी अर्थात् परमात्मा के चरणों में अर्पित कर दी, चढ़ाई उनको। निकाली हुई कहेंगे तो बड़ा अपमान होगा, तो उनको अर्पित कर दी कि आप सर्वसमर्थ हो जब चाहो तब जहाँ चाहो वहाँ करो।

तो उस समय इस प्रकार रास्ते में गोवंश की सेवा करते-करते दो सप्ताह बाद महाराज जी-भादव शुक्ल एकादशी, शनिवार, संवत् 2044 (19.09.1987) को गोधूलि वेला में सत्यपुर सांचोर चार रास्ता आ गए। पैट्रोल पंप पर एक बस खड़ी थी उसके सारथी को गोलासन हनुमान जी जाने हेतु अनुरोध किया। सारथी बोले- हम वहीं जा रहे है परन्तु सीट खाली नहीं है। इसलिए हमारे पास इस डिब्बे पर बैठ जाइए। बस रवाना हुई आधे घंटे मे गोलासन गोरक्षक हनुमान जी का मन्दिर आ गया।

गोलासन हनुमानजी मंदिर का संक्षिप्त इतिहास

यह मंदिर राजस्थान के जालोर जिले के सांचोर उपखंड के गोलासन गांव में स्थित बहुत प्राचीन और चमत्कारी धाम है। यह मंदिर करीब 700 वर्ष पुराना बताया जाता है। सांचोर से थोड़ी दूरी पर गोलासन ग्राम की गोचर भूमि पर स्थित है। आसपास के क्षेत्रों की जनता के आस्था का केन्द्र है। बताया जाता है कि यहाँ पहले जालों के वृक्षों से भरा सुनसान गोचर था। एक दिन ग्वाला गायें चरा रहा

था, तभी साधु वेश में एक महात्मा प्रकट हुए और बोले गोचर भूमि में कोई आवाज सुनाई दे तो शांत रहना, हल्ला मत करना। इसके कुछ ही देर बाद जोर से गर्जना हुई, गोवंश डरकर भागने लगा। ग्वाले ने गायों को ठहराने के लिए आवाज लगा दी। ग्वाले की आवाज सुनते ही गर्जना बंद हो गई और हनुमान जी की प्रतिमा जमीन से जितनी बाहर आई, वहीं पर रुक गई। ग्वाले के बोलने की वजह से प्रतिमा पूरी बाहर नहीं आई, आज भी आधे पैर जमीन के अंदर दबे हैं। इसलिए मूर्ति का आधा हिस्सा ही दिखता है।

हनुमानजी की प्रतिमा के साथ उनके पैरों के आगे एक कुई भी बन गई। यह कुई अत्यधिक गहरी है। भक्तों द्वारा कई बार इस कुई की गहराई नापने की कोशिश की गई लेकिन गहराई का पता नहीं चल सका। पाँच चारपाइयों की रस्सी के आगे पत्थर बाँधकर डाला, पर तलहटी तक नहीं पहुँच पाए। श्रद्धालु इस कुई में तेल-सिंदूर चढ़ाते हैं, जो कभी भरती नहीं। सैकड़ों वर्षों तक हनुमानजी की यह प्रतिमा एक जाल के पेड़ के नीचे विराजमान रही। ग्रामीणों के सहयोग से 1984 में मंदिर निर्माण शुरू हुआ और 1999 में प्राण-प्रतिष्ठा हुई।

गोलासन हनुमानजी के मंदिर का मुख्य द्वार

हर पूर्णिमा को यहाँ मेला लगता है। मंगलवार और शनिवार को विशेष पूजा होती है और मेले जैसा माहौल रहता है। हनुमान जन्मोत्सव पर 20 हजार से अधिक श्रद्धालु प्रसाद चढ़ाते हैं। 1999 में महाराज श्री के कर कमलों से इस मंदिर के साथ विश्व की सबसे बड़ी नंदीशाला श्री महावीर हनुमान नंदीशाला गोलासन की स्थापना हुई जहाँ आज 15 हजार से अधिक नर गोवंश की पूज्यभाव से सेवा हो रही है। इस नंदीशाला में श्री राम दरबार की स्थापना की गई हैं। जहाँ हर पूर्णिमा को अखण्ड रामचरित मानस पाठ होता है। जिसके श्रवण से हनुमानजी अति प्रसन्न रहते हैं- **'रामचरित सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।''**.........लगातार पढ़ते रहिये

मानव देह की दुर्लभता

(संकलित)

सभी पाठकों को दास का यथा योग्य प्रणाम! जय गोमाता ! जय गोपाल!

यह बहुत गहरा विषय है। इसका विवेचन केवल संत-महापुरुष ही कर सकते हैं, लेकिन भगवत चर्चा हेतु तथा अपने मन-बुद्धि की पवित्रता के लिये आपके साथ यत्किंचित जैसा पढ़ा, सुना और समझा उस अनुसार कुछ टूटे-फूटे विचार प्रकट करने का प्रयास किया जा रहा है। संत-महापुरुषों की मर्यादा होती है, वे किसी विषय पर शास्त्र प्रमाणानुसार और शास्त्र की सीमा में रहकर ही कुछ कहते हैं, लेकिन दास तो एक साधारण व्यक्ति होने से ऐसी सीमा से मुक्त है।

वृहदारण्यक उपनिषद में आया है- **'आत्मैवेदमग्र आसीत्पुरुषविध:'** अर्थात् संसार की रचना से पहले केवल एक परमात्मा ही थे और कुछ भी नहीं था। वे परमात्मा कैसे थे? सत् चित्त आनन्द घन ब्रह्म निर्गुण निराकार चेतन स्वरूप बिजली के करंट की भांति। कब से थे- कब से थे यह नहीं कहा जा सकता, अनादिकाल से थे, वहाँ देश काल नहीं था।

ईश्वर का अकेले में मन नहीं लगा। कोई भी खेल खेलने के लिये एक से अधिक खिलाड़ी चाहिये। ईश्वर के भीतर संकल्प हुआ - **'बहु स्यां प्रजायेयेति'** मैं से अनेक हो जाऊँ। तो वे प्रेम लीला करने के लिये अर्थात् प्रेमी-प्रेमास्पद का खेल खेलने के लिये एक से अनेक हो गए। ईश्वर स्वयं से एक से अनेक हुए, कोई बाहरी सामग्री नहीं लाये क्योंकि ईश्वर के सिवाय कुछ था ही नहीं। अपने साथ खेलने के लिये ईश्वर से ही संसार की उत्पत्ति हो गई। खिलाड़ियों (जीव)में ईश्वर ने मानने की शक्ति दी, जिससे वे प्रभु को अपना मान सके, लेकिन उस शक्ति का दुरूपयोग हुआ और जीव ने शरीर को अपना मान लिया। इससे जीव की अपने शरीर में अहमता और ममता हो गई। जो जीव (खिलाड़ी) प्रभु के भावों के अनुसार उनसे प्रेम करने लगा वो उनका प्रेमी हो गया और जो अपने शरीर प्रेम करने लगा वो ईश्वर की माया में बंध गया। उस माया में बंधे जीव को पुन: शुद्ध होकर ईश्वर से प्रेम करने के लायक बनाने के लिये 84 लाख योनियों की रचना की गई। एक बार प्रभु ने अपने से प्रेम करने के लिये मानने की शक्ति सहित मनुष्य शरीर दिया। उस शरीर का उपयोग अपने प्रेमास्पद से प्रेम करने के लिये नहीं कर सकने के कारण 84 के चक्कर में पड़ गये। 84 के चक्कर को भोगते-भोगते (वापस प्रेमी बनने के लिये शुद्धि की प्रक्रिया से गुजरना) जब बहुत दु:खी हो जाता है तब बिना ही कारण जीव से प्रेम करने वाले ईश्वर द्वारा विरले ही दया करके उसे पुन: यह दुर्लभ मानुष देह दी जाती है कि इस बार मत चूकना क्योंकि यही वो सीढ़ी है जिससे 84 के चक्कर से बाहर निकला जा सकता है, ईश्वर का प्रेमी बना जा सकता है।

कबहुँक करि करूणा नर देही।
देत ईस बिनु हेत स्नेही।।

भगवान विरले ही दया करके मनुष्य जन्म देते हैं, इसको संतों ने इस प्रकार कहा है-

बड़े भाग मानुष तनु पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।।

भारतीय सनातन शास्त्रों और दर्शन में मानव जीवन को केवल एक जैविक घटना नहीं, बल्कि आत्मा की मुक्ति का एक सर्वोच्च और दुर्लभ अवसर माना गया है। महाभारत के शान्तिपर्व में पितामह भीष्म युधिष्ठर देते हुए संसार का सबसे बड़ा रहस्य बताते हैं- **गुह्यं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि न मानुषाच्छ्रेष्ठतरं**

हि किंचित्। मैं तुम्हें वह अत्यंत गोपनीय ब्रह्म-सत्य बताता हूँ कि इस संपूर्ण जगत में मनुष्य से श्रेष्ठ और कुछ भी नहीं है। यह देह सर्वोत्तम साधना-स्थल है।इसी सत्य की अनुगुंज गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस के उत्तरकांड में काकभुशुंडि जी के मुख से कहलवाई है- **आकर चारि लक्ष चउरासी। जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी।। नर तन सम नहिं कवनिउ देही। जीव चराचर जाचत जेही।। स्वर्ग नरक अपवर्ग निसेनी। ग्यान बिराग भगति सुभ देनी।।**

चौरासी लाख योनियों में भटकने वाले इस अविनाशी जीव के लिए मानव शरीर के समान कोई दूसरा शरीर नहीं है। चराचर जगत के सभी जीव (यहाँ तक कि देवता भी) इस देह की याचना करते हैं। क्योंकि यही शरीर स्वर्ग, नरक और अपवर्ग (मोक्ष) की सीढ़ी है।

शास्त्रों का स्पष्ट उद्घोष है कि जो व्यक्ति इस अनुपम अवसर को पाकर भी आत्म- कल्याण के मार्ग पर अग्रसर नहीं होता, वह आध्यात्मिक रूप से अपनी ही हत्या करता है।

सृष्टि के अनगिनत योनियों के चक्र में मानव शरीर का प्राप्त होना कोई साधारण घटना नहीं है। यह कोटि-कोटि जन्मों के पुण्यों और ईश्वर की असीम अनुकंपा का परिणाम है। जहाँ अन्य योनियाँ केवल भोग योनियाँ हैं (जहाँ जीव केवल अपने पूर्व कर्मों के फल भोगता है), वहीं मनुष्य शरीर को कर्म योनि और साधन धाम कहा गया है- **साधन धाम मोक्ष कर द्वारा। पाइ न जेहिं परलोक संवारा। सो परत्र दुख पावइ, सिर धुनि धुनि पछिताइ। कालहि कर्महि ईस्वरहि, मिथ्या दोस लगाइ।।**

यही वह एकमात्र द्वार है जहाँ से जीव अज्ञान के बंधनों को काटकर मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। इस सर्वोच्च अवसर को पाकर भी जो संसार के नश्वर भोगों में लिप्त रहता है और आत्म-साक्षात्कार का प्रयास नहीं करता है वह शास्त्र की दृष्टि में आत्मघाती यानी आत्म हत्यारा है। फिर समय, भाग्य और ईश्वर पर झूठा दोष लगाता है।

उपनिषदों में इस विषय को अत्यंत कड़े शब्दों में रेखांकित किया गया है। ईशावास्योपनिषद के तीसरे मंत्र में स्पष्ट कहा गया है:

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।

वे लोक जो सूर्य के प्रकाश से हीन और अज्ञान रूपी घने अंधकार से ढके हैं, मृत्यु के बाद वे लोग उन्हीं लोकों (नरक या निम्न योनियों) को प्राप्त होते हैं, जो अपनी आत्मा की हत्या करने वाले (आत्महन्) हैं। यहाँ आत्मघाती का अर्थ शारीरिक आत्महत्या नहीं है, बल्कि अपनी वास्तविक चेतना (आत्मा) को भुलाकर उसे संसार के मोह-माया के अंधकार में धकेल देना है। जो जीव परमात्मा के अंश रूप अपनी आत्मा को पहचानकर उसका उद्धार नहीं करता, वह शास्त्र की दृष्टि में सबसे बड़ा आत्म-हत्यारा है।

श्रीमद्भागवत पुराण के एकादश स्कंध में भगवान श्रीकृष्ण अपने परम मित्र उद्धव को समझाते हुए मानव देह की महत्ता और उसे व्यर्थ गंवाने वाले की स्थिति का सुंदर वर्णन करते हैं:

नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं प्लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारं। झ मयानुकूलेन नभस्वतेरितं पुमान् भवाब्धिं न तरेत् स आत्महा।।

यह मानव शरीर सब सिद्धियों का मूल है। यद्यपि यह अत्यंत दुर्लभ है, फिर भी (ईश्वर की कृपा से) इस समय यह सुलभ हो गया है। इस संसार-सागर को पार करने के लिए यह एक सुदृढ़ नौका के समान है; गुरु इसके खेवनहार (नाविक) हैं और मेरी कृपा ही अनुकूल वायु है। जो मनुष्य ऐसी अनुकूलता पाकर भी इस संसार-सागर से पार नहीं होता, वह निश्चित ही आत्महा ....शेष अगले अंक में

श्रीमद् भागवत कथा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

......पिछले अंक से आगे

वर्षा ऋतु में लगातार घास उगने के कारण सारे रास्ते ढ़क गए और उन्हें पहचानना कठिन हो गया। उनकी स्थिति ऐसी हो गई जैसे समय बीतने पर ब्राह्मणों द्वारा अभ्यास (स्वाध्याय) न किए जाने के कारण वेद मंत्र लुप्त हो जाते हैं।

सरितोऽनूप चक्रुश्च वीचिक्षोभकुलाः पथः।
यथा कामवशा चित्तं गृहं च मतिमात्मनः।।

अर्थात् वर्षा के तेज वेग से नदियां अपने किनारों को तोड़कर रास्तों को जलमग्न कर रही हैं। यह दृश्य वैसा ही है जैसे अपनी इंद्रियों और इच्छाओं के वश में होकर कामी पुरुष का चित्त अपनी मर्यादाओं को भूलकर बिखर जाता है।

सुंदर वर्षा ऋतु का शुभागमन हुआ। यह वर्षा ऋतु कैसी है?

कीटाश्च कीटाणां चौव जायन्ते वृष्टिदोषतः।
सर्वसत्त्वसमुद्भवोऽयं कालः कस्य न वल्लभः।।

अर्थात् जिससे सभी प्रकार के जीवों, वनस्पतियों और प्राणियों की उत्पत्ति होती है। वर्षा ऋतु को शास्त्रों में सर्वसत्त्वसमुद्भवः काल कहा गया है क्योंकि पानी की बूंदें गिरते ही सूखी धरती से अनगिनत कीड़े-मकोड़े, घास, पौधे और नए जीव जीवित हो उठते हैं।

सबसे ज्यादा जीवन की सृष्टि वर्षा ऋतु में होती है। कितने प्रकार के लिए तितलियां कितने प्रकार की तितलियां मकोड़े पतंगे यह सब के सब वर्षा ऋतु में ही उत्पन्न होते यही कारण है की वर्षा काल में हमारे पूर्वजों ने यात्रा पर प्रतिबंध लगाया है और एक व्यवस्था बनाई है चातुर्मास व्रत की। जीव धरती पर पैदा हो जाते हैं कि आप चलेंगे तो जरूर भी आपके पैर के नीचे आकर के मृत्यु को प्राप्त हो जाएंगे। जब हमने उन्हें पैदा नहीं किया तो उनको समाप्त करने का हमारा कोई अधिकार नहीं है। राक्षसों का सिद्धांत क्या है? राक्षसों का सिद्धांत है खुद जियो और किसी को मत जीने दो। फिर राक्षसों का सिद्धांत और सज्जन पुरुषों का सिद्धांत है जियो और जीने दो। खुद भी आनंद से जियो और किसी के आनंद में दखल मत डालो। सब सुखी रहे, सब आनंद में रहे और हम सुखपूर्वक जिएंगे कब?

चार वेद षट्शास्त्र में, बात लिखी है दोय।
दुःख दियों दुःख होत है, सुख दियों सुख होत॥

आप लोग चाहते हैं कि हमारे जीवन में कभी दुःख ना आवे तो यह निश्चय कर लो कि हमें कोई भले ही दुःखी करें पर हम किसी को दुःखी नहीं करेंगे। आप दूसरों को सुख दोगे तो आपको सुख मिलेगा और दुःख दोगे तो आपके भी दुःख आयेगा ही। यही कर्म सिद्धान्त है। सुख है जो देने की वस्तु है, सुख लेने की वस्तु नहीं है पर जो लेने की वस्तु है वह लेते नहीं बल्कि जो देने की वस्तु है उसको तो हम लेते रहते हैं हमेशा। सुख लेते रहते हैं, हम सुख देते नहीं सुख लेते हैं और दुःख भोगने की वस्तु है दुःख देने की वस्तु नहीं है, दुख भोगने की वस्तु है किसी को देने की वस्तु नहीं है पर दुःख भोगते भी है और दूसरों को देते भी हैं। तो जब तक दूसरों को पीड़ा पहुँचाते रहोगे तब तक तुम पीड़ा रहित नहीं बन पाओगे।

अब एक प्रश्न है, बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न है। प्रश्न यह है कि कई बार ऐसा देखा जाता है कि जिस व्यक्ति से हमारा दूर-दूर तक कोई लेना-देना नहीं, हमने किसी भी प्रकार का नुकसान उसे पहुँचाया नहीं तो भी वह एकदम काल जैसा बन जाता है और हाथ धोकर हमारे पीछे पड़ जाता है। अकारण ही वैर, अकारण ही शत्रुता करने लग जाता है तब क्या करें? तब हम क्या समझें? भाई हमने उसका कुछ

बिगाड़ा नहीं, लेकिन वह तो एकदम हमको देखना ही नहीं चाहता है। उस समय यह समझना चाहिए कि जैसे आज यह हाथ धोकर के दुःख देने के लिए हमारे पीछे पड़ा है हमने भी किसी भी जन्म में इसी प्रकार का व्यवहार इस व्यक्ति के साथ किया होगा तो बहुत अच्छा है, पुराने प्रतिशोध की जो भावना है उसका हिसाब किताब चूकता हो रहा है लेकिन कर्म का नया खाता हमें खोलना नहीं है। ऐसा निश्चय करके यदि मनुष्य प्रतिशोध की भावना का त्याग कर दे तो उसका पुनर्जन्म नहीं होगा। लोक-परलोक को भोगने की चाह और प्रतिशोध की भावना- ये दो इच्छाएं ही जीव को जन्म-मृत्यु के चक्कर में धकेलने वाली है। संस्सृति के चक्कर में धकेलने वाली है।

इसलिये हमें कुछ नहीं चाहिए, हमें कुछ नहीं चाहिये पहले एक निश्चय करो- हमको कुछ नहीं चाहिए फिर हम प्रचंड पुरुषार्थ करेंगे निष्कामभाव से। जो कुछ मिलेगा उसका खूब अच्छे कार्यों में उपयोग करेंगे कोई समस्या नहीं। अच्छा, यह बताओ कि चाहने से मिलता है क्या? चाहने से हो जाता होता तो यहाँ जितने लोग बैठे हैं सब-के-सब राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री बन जाते, छोटा-मोटा आदमी कोई क्यों बनना चाहेगा। चाहने से तो नहीं होता। जब चाहने से कुछ होता ही नहीं चाहना क्यों?

चाह गई चिंता मिटी मनवा बेपरवाह।
जिनको कछु नहीं चाहिए, सो साहन के साह।।

उनको कुछ करने की जरूरत नहीं कि कोई मुकुट आए और उनके सिर पर रखें। इस प्रकार की फकीरी वाले जो लोग हैं वे तो बिना मुकुट के सारी धरती के बादशाह हैं। भगवान किसके हृदय में रहते हैं? रहते तो सभी के हृदय में हैं लेकिन अनुभूति कौन कर पता है कि मेरे हृदय में प्रभु का विलास हो रहा है?

जिनको कछु नहीं चाहिए, तुम संग सहज सनेह।
बसहू निरंतर तासु उर, सो राउर निज गेह।।

इसलिये किसी प्राणी को पीड़ा मत पहुंचाओ, किसी से तुम बैर मत रखो तो तुम पीड़ा रहित हो जाओगे। सबको सुख दो, किसी से सुख लेने की इच्छा मत रखो।

ध्यान दें! आप निरंतर यही सोचें कि हम अपनी संतान को सुख देंगे और संतान निरंतर यही सोचे कि हम अपने पिताजी को सुख देंगे तो बाप-बेटे में कभी भी वैमनष्यता नहीं होगी, कभी कलह नहीं होगा। बड़ा भाई सोचे कि हम छोटे भाई को खूब सुख देंगे, हम इसको भरपूर बदले में हमको कुछ नहीं चाहिए और छोटा भाई सोचे कि हम बड़े भाई को भरपूर सुख देंगे तो भाई-भाई में कभी वैमनष्यता होगी क्या? पत्नी यह निश्चय करें कि हम अपना सर्वस्व नौशावर करके इन्हें प्रसन्न रखेंगे, इनको सुख देंगे ये जैसे सुखी हो वैसा हम करने के लिए राजी है, मुश्किल से मुश्किल में भी तैयार हैं यह पत्नी सोच ले अपने पति को सुख देने की इच्छा से और पति यही सोचे कि हमारी अपनी कोई इच्छा ही नहीं है हमारा कोई आग्रह नहीं है, हम किसी भी कीमत पर इनको दुःखी नहीं करेंगे, इनको सुख पहुंचायेंगे तो मेरा विश्वास है कि जीवन की अंतिम सांस तक भी उन पति-पत्नी का प्रेम घटेगा नहीं बढ़ता ही चला जाएगा। समस्या यह होती है कि हम आपसे सुख तो चाहते हैं पर आपको सुख देते नहीं। बस यही समस्या है संसार में आपसी कलह और दुःख की। इसलिये-

कबीरा खड़ा बाजार में, मांगे सबकी खैर।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर।।

सर्वसत्वसमुद्भवा- प्राणियों का जीवन बहुत मूल्यवान है ऐसा विचार करके हमारे पूर्वज चातुर्मास एक ही स्थान पर किया करते थे। आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी से लेकर कार्तिक मास की शुक्ल एकादशी तक यात्राएं नहीं करते थे। अब प्रश्न है कि चार महिने क्या करते होंगे पुरखा लोग? तो महाभारत आदि ग्रन्थों में लिखा हुआ है कि 8 महिने कमाओ, 4 महिने आनन्द से घर में खा पी सको मौज से इसके

लिये। तो उन चार महिनों में क्या करें? क्या उन चार महिनों को भोग विलास में समाप्त कर दें क्या? नहीं, चातुर्मास में एक समय का भोजन है, और भी कई व्रत ले लेते हैं। इस प्रकार वे चार महिने तपस्या करने के लिये है भोग भोगने के लिये नहीं।

पहले हमारे यहाँ समस्त सनातनी हिन्दू चातुर्मास व्रत लेते थे और साधु-संत तो प्रायः चातुर्मास करते ही थे। अब हमारे केवल जैन परम्परा के संत चातुर्मास करते हैं। जैन परम्परा देश में आज भी पूर्व की तरह प्रतिष्ठित है क्योंकि उनके साधु-संत आज भी चातुर्मास व्रत करते हैं। पहले सभी संत पैदल घूमते थे और जहाँ वर्षाकाल लग गया वहीं उसी गाँव-नगर में स्थिर हो जाते थे। तो एक-एक संत, एक-एक गाँव में चातुर्मास करते थे। भारतवर्ष का ऐसा कोई गाँव-नगर, तालुका नहीं होता था जिसमें किसी महान संत ने चातुर्मास नहीं किया हो और उन संतों की उपस्थिति के कारण 4 महीने तक का जो सत्संग लोगों को मिलता था उस सत्संग के दिव्या प्रभाव से भयंकर मुगल काल में और अंग्रेजी शासन के काल में भी हमारे हिंदू धर्म का, वैदिक सनातन ध र्म का कुछ नहीं बिगड़ा। इतने अत्याचार सहन करने के बाद भी हमारा धर्म सुरक्षित रहा। इसलिए आवश्यकता है फिर से चातुर्मास धर्म को फिर से आरंभ करने की और होना चाहिए। बालो वृन्दावन बिहारी लाल की जय। हमारे पूज्य पथमेड़ा महाराज जी 2 महीने का चातुर्मास करते हैं पक्षो वे मासः इस भाव को लेकर और चार महीने का भी चातुर्मास करते हैं।

कहते हैं सूर्य और चंद्रमा पर मंडल प्रकाश में मंडल बैठने लगे। आपने देखा होगा वर्षा काल में सूर्य के चारों ओर भी एक मण्डल बन जाता है। देखा कभी-कभी एक घेरा बन जाता है और चंद्रमा में तो प्रायः रात्रि में आप देखेंगे कि चारों ओर घेरा सा बन जाता है। तो पुराने गांव के लोग कहते थे कि देवताओं की गोष्ठी हो रही है कि कैसे पानी बरसे क्या करना चाहिए पंचायती हो रही है देवताओं की कि धरती पर क्या-क्या काम इस बार हम लोगों को करना है? देवताओं की गोष्ठी हो रही है इसमें लिखा है ऐसे लगता है और मंडल बैठने लगे हैं। बादल वायु चमक रही है और बिजली कड़क रही है। आकाश शुद्ध सा दिखने लग गया है। आकाश में नीले बादल घिर के आ गए हैं, बिजली कोंधने लगी है, बार-बार गड़गड़ाहट सुनाई पड़ रही है। सूर्य, चंद्रमा और तारे बादलों से ढ़क जाते हैं, इससे आकाश की शोभा हो रही है। आकाश की ऐसी शोभा हो रही है जैसे ब्रह्म स्वरूप होने बाद भी गुणों से ढ़ग जाने के कारण जीव की जैसी शोभा होती है ऐसी शोभा हो रही है। सूर्य की कैसी शोभा हो रही है-

अष्टौ मासान् निपीतं यद् भूर्य सूर्येण वारिणाम्।
तद् वृष्ट्या पुनरुत्सृज्यते काल आगते ।।

अर्थात् सूर्य आठ महीनों तक पृथ्वी का जल खींचता है और समय आने पर वही जल वर्षा के रूप में वापस बरसता है।

मेघा गम्भीरनिनदा ददृशुः सिक्तभूतलाः ।
जीवन्ति सर्वभूतानि वर्षाभिः प्राणिनो यथा।।

अर्थात गंभीर गर्जना करते हुए मेघ पृथ्वी को सींचते हैं। वर्षा से सभी जीव ऐसे जीवित होते हैं जैसे प्राण मिल गया हो।

8 महीने तक सूर्य ने जो रस को सोखा था, जो जल को सोखा था अब वो 4 महीने में बरसा रहे हैं। कैसे? जैसे प्रजावत्सल राजा जनता से टैक्स लेता है, राजकर लेता है और उस कर में उसे जो राजस्व मिला है उसको जनता की उन्नति के कार्यो में लगाता है। आज जो भारतवर्ष में विकास के बड़े-बड़े कार्य हो रहे हैं, विकास दर भारतवर्ष की घट नहीं रही है। वैश्विक स्तर पर ऐसे घटनाक्रम होने के बावजूद भी भारत की विकास दर लगातार बढ़ती जा रही है और लोग विचार कर रहे हैं कि 2047 तक भारतवर्ष विकसित राष्ट्र होगा, बल्कि 1 नम्बर पर होगा......

श्री राम कथा

(पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज)

श्री राम पंचायती मंदिर संगरिया

पिछले अंक से आगे........

सज्जनों! आत्मा का उद्धार होना आवश्यक है और यह इसी शरीर से संभव है। यहाँ भूल करने वाले लोग बड़े दुष्परिणाम भोगते हैं। हमारे उपनिषदों में पहला उपनिषद है जिसका नाम है- ईशावास्योपनिषद उसमें दूसरे या तीसरे मंत्र में लिखा है-

असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽवृताः।
ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।

असूर्या नाम का लोक है जो अंधेरे में डूबा रहता है। कैसा है यह लोक? जहाँ सूरज का प्रकाश नहीं जाता हो, अंधकार ही अंधकार रहता है जहाँ। वह घने अंधकार से भरा हुआ लोक है। वह अंधमय अंधकार लोक है। वह अंधकार से भरा हुआ लोक है। नाम है असूर्या। असूर्या माने जहाँ सूरज का प्रकाश नहीं जाता हो। **ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः** देह छूटने के बाद की अवस्था का वर्णन है। मरने के बाद इस लोक में, अंधेरे में उन लोगों को भेजा जाता है जो अपनी आत्मा के कल्याण के लिये सावधान नहीं है, मनुष्य शरीर मिलने के बाद भी आत्मा के कल्याण के लिये कुछ नहीं करके भोगों में ही डूबे रहते हैं। वे ही असली आत्म हत्यारे हैं। उनकी गति वही होती अंधेरी सभ्यता में, परलोक में जाने पर, देह छूटने पर जाते हैं उस लोक का संकेत है। देह छूटने के बाद की अवस्था का वर्णन है जहाँ अंधेरा वाला लोक है जो आत्म हत्यारे लोग हैं उनकी दुर्गति यही है कि उन्हें अंधेरे में ठोक दिया जाता है। उन्हें अंधेरे में गिरा दिया जाता है। जो आत्महत्या कर लेते हैं, जो आत्महत्या वाले लोग हैं उनको उन्हीं असूर्या नाम के लोक में फेंक दिया जाता है।

अब आत्महत्या शब्द यहाँ आया है इसका मतलब हम लोग अखबार पर नजर डालना शुरू करेंगे। उसके समाचार में लिखा रहता है एक ने रस्सी का फंदा लगाकर खुदकुशी की है, किसी ने जहर खाया है, किसी ने ऊँचे मकान से छलांग लगाया, किसी ने जल में डूबकर, किसी ने आग लगाया तो हम तीन चार कोटि के आत्महत्याओं के बारे में जानते हैं, पर ऐसा नहीं है। गीता दर्शन में आत्महत्याओं का स्वरूप अलग बताया है और यहाँ उपनिषदकार आत्महत्या किसे कहते हैं? आत्महत्या कहते किसको है? आत्महत्या जहर खाना नहीं है, आत्महत्या जल में डूबना नहीं है, आत्महत्या किसी प्रकार से छलांग लगाना नहीं है, आत्महत्या है कि मनुष्य होकर के देवत्व को नहीं प्राप्त किया। मनुष्य से कीट पतंग और नीची योनियों में चला गया यही तो आत्महत्या है, यही अवसादन है, यही तो पतन है।

मनुष्य मनुष्य बनकर रह जाए तो भी भला, मनुष्य देवत्व को प्राप्त करें तो भी भला, मनुष्य आत्मसिद्धि करके परमात्मा के धाम को प्राप्त करें दो भला। पर अगर यह मनुष्य फिर से जन्म लेने के लिए बाध्य हो गया 84 लाख योनियों में, इसका पुनः अवसादन हुआ, पतन हुआ, गिरना पड़ गया, गिनती नीचे की ओर उतर आई तो इसको कहते हैं आत्महत्या। आत्मा का स्तर गिरना, इसी को आत्महत्या कहते हैं। तो ऐसे जो जीव है उन्हें असूर्या नाम का लोक प्राप्त होता है। अपने घर में बिजली का कनेक्शन जोड़ा हुआ है उसके बाद भी क्या करते हैं कि बिजली के जाने के डर से जनरेटर लगवाया जाता है, उसमें भी हो सकता है डीजल की कमजोरी पड़ जाए कभी गलती से फिर क्या होगा इनवर्टर लगाओ, इनवर्टर भी कई बार बैटरी चौक कर जाता है फिर क्या करेंगे कहा जो हाथ वाला टॉर्च ले लो, मोबाइल में बत्तियां आ गई वो काम ले लेंगे। मनुष्य का स्वभाव है कि अंधेरे में जी नहीं रह सकता। मनुष्य अंधेरे को सहन

कभी कर नहीं सकता और जब हमको अंधेरे वाले लोक में रख दिया जाएगा तो क्या दशा होगी? इसलिये अपने जीवन के प्रति हम सब सावधान हो जाएं और इन रामायण जी के माध्यम से आत्म कल्याण का हम सब अपना अन्वेषण करें, अपनी जिज्ञासा को जीवंत बनाएं कि हमें राम जी को जान लेना है, जान ही क्या लेना है देख लेना है। बहुत सारा जीवन पड़ा है अभी हम अभी निराश नहीं होने जा रहे हैं। इन आंखों से हम भगवान को देख सकें इतनी आतुरता से भक्ति करनी है। बोलो भक्त वत्स भगवान की जय।

श्रीमद् रामचरितमानस जी के माध्यम से कथा की उस दिव्यता की ओर हम सब चलें। बातें बहुत रह जाती है पर समास विधि से मानस जी का हम सब दर्शन करते हुए चलते हैं। हे हरि भक्तों! अद्भुत चरित्र है यह मानस बंदना का प्रकरण जो एक-एक पंक्ति में बाबा तुलसी ने सद्गुरु से आरंभ करते हुए ब्राह्मण, संत, असंत, खल की वंदना की है। सज्जन की वंदना तो हम लोग करते हैं स्वभाव है और दुर्जन के प्रति हमारी बुद्धि नहीं जाती। दुर्जन की वंदना क्यों करें? कहा बारीकी से जानिये दुर्जन की वंदना से ज्यादा भलाई होती है। बोलिये भक्तवत्सल भगवान की जय।

कहते हैं कि दुर्जन की वंदना से उपद्रव नहीं होता जीवन में। दुर्जन वंदनीय हो जाए हमारी ओर से तो हमारे प्रति दुर्भावना को मिटा लेंगे, हमारे किसी काम में दखल नहीं देंगे किसी भी अच्छे कर्मो में विरोध नहीं करेंगे। हंगामा नहीं मचायेंगे, उछल कूद नहीं करेंगे तो वंदना लाभप्रद हुआ कि नहीं। भले की वंदना तो करना ही चाहिए भले ही भले हैं। बुरे की भी वंदना करो ताकि वह अपनी बुराई से दूर रहे और कम से कम मेरे लिए तो बुरी भावना ना रखें, उनकी दुर्भावना के हम पात्र ना बने। इसलिए उनको अव्वल नंबर में रखो उनकी बड़ाई पहले नंबर पर आनी चाहिए। तो मानसकार भगवान ने उनकी भी वंदना की।वंदना की प्रेत पिता गंधर्व की वंदना कर दी। भूत पितरों की वंदना कौन करें? बाबा तुलसी कहते हैं हम जिस कार्य को लेकर चले हैं, जो मेरा उद्देश्य है वह बहुत बड़ा है और रामकाज में कहीं से छोटी सी गलती हो जाए तो नुकसान बहुत बड़ा हो सकता है।

मोटर सवा करोड़ की खरीदो उसमें एक-एक मशीन का कीमत लाखों लाखों में है पर टायर में जो हवा डालते हो वो दो रुपए का होता है कहीं गलती से हवा निकल जाए तो सवा करोड़ की हवा निकल जाएगी। किसी भी वस्तु को कमजोर नहीं माना जाना चाहिये। सबके महत्व अपने-अपने स्थान पर हैं। वह सवा करोड़ की गाड़ी हो सकती है पर हवा भी दो रुपए की कमजोर नहीं होती है, उसकी भी ताकत है कि वह आपका रेस देता है आपको गति से पहुंचा देता है। इसलिए जीवन में किसी की भी उपेक्षा भाव हम ना रखें। सबसे समीक्षा पूर्वक उनसे हित का चिंतन करें और किस प्रकार से किसको हम किस बात से मना सकते हैं इस बात की हमारी बारीक बुद्धि होनी चाहिये।

तो मानसकार ने जो महायज्ञ आरंभ किया है मानस की रचना का उसमें किन्हीं के द्वारा किसी भी भूल चूक से उपद्रम न मच जाए इसलिए दुर्जन, प्रेत पिशाच भूत आदि की भी वंदना कर दी। बहुत ही अनमोल चिंतन है बाबा का। सभी प्रसंगों पर हम नहीं जा पाएंगे। हम सीधे नाम वंदना में आना चाहते हैं। बाबा ने नाम पर कलम तोड़ दिया है। तो बाबा के उस पक्ष में हम विचार करने जा रहे हैं। सज्जनों! यह मानस एक अद्भुत ग्रंथ है। राम कथा की अद्भुत पूंजी हम जीवों को प्राप्त है। इसमें सबके लिए समान अधिकार दिया है। कोई जीव ऐसा नहीं कि मानस का अधिकारी ना हो, भगवान की कथा के अधिकारी ना हो, वो श्रोता बनकर रामचरित्र को ना सुन सके। बाबा ने फलश्रुति बताई-जे एहि कथहि सनेह समेता। कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता।....लगातार पढ़ते रहिये

शिव महापुराण कथा

(वेद मंदिर अहमदाबाद)

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

...........भगवान शिव के पास सभी रिद्धियों-सिद्धियों हैं। रिद्धि-सिद्धि तो शिवजी की बहुएं ही हैं। गणेश जी शिवजी के बेटे हैं, रिद्धि-सिद्धि उनकी दोनों पत्नियों हैं तो ये सब तो शिवजी के घर के ही हैं। सब चीजें शिवजी के आसपास ही रहती है। ससुर जी के साथ ही तो सब बेटा बहू रहते हैं और शिव परिवार तो अपनी एकता के लिए अपने आपसी सामजस्य के लिए प्रसिद्ध है। सिंह और नंदी दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं लेकिन शिव परिवार में दोनों, साथ ही रहते हैं। बोलिए ना। चूहा और सांप दोनों का कोई मेल नहीं है, जन्म-जन्म का दोनों की दुश्मनी है लेकिन शिव परिवार में दोनों साथ ही रहते हैं। मोर की और सांप की आपस में कभी नहीं बनती लेकिन शिव परिवार में दोनों साथ है। यह परिवार तो अपनी एकता के लिए प्रसिद्ध है और सब साथ में ही रहते हैं।

तो जब कोई शिवजी के पास में कामनाएं लेकर के जाता है ना तो उसका शिव से कोई संबंध नहीं होता है। जब कोई कामना लेकर आता है जैसे पिता भोजन कर रहे हो और नन्हा सा पुत्र आकर के कहे कि पिताजी पिताजी गली में एक कुल्फी वाला आया है मुझे पैसे दो में कुल्फी खाकर आऊंगा, पैसे दो में कुल्फी खाकर आऊंगा और पिताजी भोजन कर रहे होते हैं तो माँ को लगता है इसको कुल्फी का पैसा देने करने के लिए उनका भोजन बाधित होगा तो वह मां कहती है कि मेरे पास आ पापा को मत परेशान कर दो रुपये मैं देती हूँ और वह पांच रुपया, दो रुपया जो भी कुल्फी का होता है वह पकड़ा कर भेज देती है। ऐसे ही भगवान शिव अपनी आराधना में, उपासना में, साधना में रहते हैं तो हमारे जैसे जो कुछ मांगने में जाते हैं कि ये दे दो, वो दे दो तो उनको शिवजी की बहुएं रिद्धि-सिद्धि ही निपटा देती है कि भैया ये लो और जाओ यहाँ से, बाबा को भजन ध्यान करने दो। इनको मत तंग करो, जो भी है आपका लेकर जाओ। लेकिन बाबा के पास कुछ लेने के लिये नहीं आते हैं, पास बैठकर अपना स्वरूप अपने स्वरूप को उनके स्वरूप का स्पर्श करने को आते हैं उनको वह रिद्धि सिद्धि समीप बिठाती है कि बैठो बाबा के पास, बाबा से मन जोड़ो, बाबा से मन जोड़ो। धन के लिये हाथ मत जोड़ो, बाबा से मन जोड़ो। शिव से मन जोड़ो, शिव मन के धनी हैं।

तो सर्वश्रेष्ठ शिव उपासना जो है वह उनके समीप घड़ी आध घड़ी बैठकर के और अपने देह को विस्मृत करके और उनके स्वरूप के साथ अपने आप को जोड़ना यह सबसे बड़ी शिव पूजा है। यह सबसे बड़ी शिव पूजा है और मैं आपको विश्वास के साथ कहता हूँ कि अभी आपको यह बताते-बताते मेरा ह्रदय भर गया, आपको यह बताते-बताते मेरे नेत्र भर गए। आपको यह बताते-बताते मेरा ह्रदय आनंद से भर गया। अगर अभी कथा नहीं करनी होती और मैं इस मौज में आगे बढ़ता तो न जाने में क्या-क्या लेकर आता। सोचिए जब यह चर्चा इस स्थिति को दे रही है तो करना क्या स्थिति को देगा और यहाँ तो छोटा-मोटा, छोटा-मोटा कोई न कोई विक्षेप होता है, मगर आपके घर पर तो कोई विक्षेप भी नहीं होगा। आप में से कइयों के घर में इतनी जगह है कि कहीं किसी स्थान पर चुप होकर बैठ सकते हैं। कुछ नहीं करना बस। शिव एक ऐसा तत्व है जो सर्वत्र मोजूद है, क्यों? क्योंकि शिव का कोई आकार नहीं। और जिसका कोई आकार नहीं वो सब जगह हो सकता है। **निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोऽहं।।**

मैं उन भगवान शिव (गिरीश) को नमन करता हूँ, जो स्वरूप रहित (निराकार) हैं। जो संपूर्ण सृष्टि के आदि मंत्र ॐ के मूल आधार हैं। जिन्हें शब्दों, सांसारिक ज्ञान या इंद्रियों द्वारा पूर्णतः नहीं समझा जा सकता। जो दुष्टों के लिए भयानक कालस्वरूप हैं, परंतु अपने भक्तों के लिए परम कृपालु, सद्गुणों के धाम और इस भवसागर से मुक्ति दिलाने वाले हैं।

उनका कोई आकार नहीं है इसलिये वे सर्वत्र प्रतिष्ठित हैं। आप घर में, मंदिर में कहीं भी शांत होकर बैठ जाइए। आप देखेंगे कि धीरे-धीरे ऐसा आनन्द आयेगा, ऐसा आनन्द आयेगा। जब गुरु स्वाध्याय करे तब शिष्य भी अपना ग्रन्थ लेकर बैठे। हमारे पूज्यपाद श्री मलूक पीठ वाले महाराज जी जब संध्या, जप आदि करते हैं तो आसपास में जो भी शिष्य, सेवक आदि होते हैं वे भी अपनी-अपनी माला आदि लेकर बैठ जाते हैं। क्यों? क्योंकि इससे अपनी माला भी पुष्ट होती है, अपना भजन भी परिपक्व होता है। इसलिये शिव के पास शांत बैठ जाएं। करुणानिधान! ठसा हुआ घी जलते हुए चूल्हे के पास रख दिया जाए ना तो पिघल जाता है। इसी प्रकार ऐसे भजन कर रहे महापुरुषों के समीप हम जैसे लोग भी बैठ जाएं तो हृदय भक्ति में पिघल जाता है, भाव में पिघल जाता है।

शिव के समीप शांत बैठ जाएं, शिव के समीप शांत बैठ जाएं यह सबसे बड़ा शिव पूजन है, सबसे बड़ा शिव पूजन है और सबसे सरल पूजन है। जिससे कुछ साधन न बने, पूजन न बने, कुछ ना बने वह इस साधन को पक्का पकड़ के रखें और जिससे बनता भी है कि नहीं नहीं हम क्यों ध्यान लगाएं, हम तो गंगाजल चढ़ा सकते हैं, हम तो बिल्व पत्र चढ़ा सकते हैं, हम तो शुद्ध गाय का, देसी गोमाता का दूध चढ़ा सकते हैं, कोई बात नहीं वे ऐसा करें लेकिन यह करने के बावजूद भी शिव को जो प्रिय है वह भी तो कुछ करें। तो करुणानिधान ऐसी है शिव भक्ति, ऐसी है शिव उपासना।

करुणानिधान! अब हम लोग चलते हैं आगे के क्रम में- प्रयागराज में साधु-संत, ऋषि-मुनि एकत्रित हुए हैं और भगवान वेदव्यास जी सभी को शिव कथा सुना रहे हैं, शिव महापुराण सुना रहे हैं। कहते हैं शिव पुराण विवाद मिटाने के लिए है।

तावत्सर्वाणि मंत्राणि विवदंति महीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति महीतले।।

अर्थात् इस पृथ्वी तल पर तभी तक सभी मंत्र (अपनी-अपनी श्रेष्ठता के लिए) आपस में विवाद करते हैं, जब तक कि शिवपुराण का उदय (प्रकट) नहीं हो जाता। अर्थात, शिवपुराण के प्रकट होने पर सभी मंत्रों का संशय मिट जाता है और इसकी सर्वोच्चता सिद्ध होती है।

तावत्सर्वाणि क्षेत्राणि विवदंति महीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति महीतले।।

अर्थात् इस पृथ्वी तल पर तभी तक सभी तीर्थ क्षेत्र (अपनी-अपनी महिमा और फल देने की शक्ति के लिए) आपस में विवाद करते हैं, जब तक कि शिवपुराण का उदय नहीं हो जाता। अर्थात्, शिवपुराण का श्रवण या पाठ करने से मनुष्य को संसार के सभी पवित्र तीर्थों का फल एक साथ मिल जाता है। इन श्लोकों के माध्यम से शिवपुराण की सर्वोच्च महिमा को दर्शाया गया है। इसका अर्थ है कि शिवपुराण का ज्ञान और भक्ति इतनी परम कल्याणकारी है कि इसके सामने अन्य सभी मंत्रों का जप और सभी तीर्थों की यात्राएं गौण (कम महत्वपूर्ण) हो जाती हैं। शिवपुराण अकेले ही जीव को परम गति और मोक्ष प्रदान करने में सक्षम है। इस धरती पर कोई भी विवाद तभी तक है जब तक प्राणी को शिव तत्व समझ में नहीं आता, शिव महापुराण नहीं समझ में आती।

शिव तत्व कैसा है? आज देखो एक भाई के पास बहुत धन हो और दूसरे भाई के पास कम हो तो जिसके पास कम होता है वह विवाद ...लगातार पढ़ें

सनातन धर्म

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

........पिछले अंक से आगे

(6) धर्म की प्रधानता

मोक्ष जीवन का ध्येय है, इसलिए हिंदू संस्कृति में धर्म के साथ जीवन का अटूट संबंध है। छोटे से छोटे काम से लेकर बड़े से बड़े काम में प्रत्येक क्रिया के साथ धर्म को जोड़ा गया है। हमारी संस्कृति में जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी संस्कारों की व्यवस्था धर्म के अनुसार व्यवस्थित की हुई है। कहाँ तक कहा जाए, हमारी संस्कृति में कोई भी ऐसी क्रिया नहीं है जो कि धर्म विरुद्ध हो और उसे करने की छूट दी गई हो।

श्रीमद्भागवत महापुराण के सातवें स्कंध के 11वें अध्याय में देवर्षि नारद ने युधिष्ठिर को सनातन धर्म के 30 मुख्य लक्षण बताए हैं, जो सभी मनुष्यों के लिए आचरणीय हैं। इन लक्षणों का पालन करने से मनुष्य परमपिता परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। श्रीमद्भागवत के अनुसार धर्म के 30 लक्षण निम्नलिखित हैं:

व्यक्तिगत और सामाजिक आचरण के नियम

1.सत्य: हमेशा सत्य बोलना और सत्य का आचरण करना।

2.दया: संकट में पड़े जीवों पर करुणा करना और उनकी सहायता करना।

3.तपस्या: धर्म के मार्ग पर चलते हुए कष्टों को आनंदपूर्वक सहना।

4.शौच: शरीर की बाहरी और मन की आंतरिक पवित्रता बनाए रखना।

5.तितिक्षा: सुख-दु:ख और अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करना।

6.उचित-अनुचित का विचार (विवेक): क्या सही है और क्या गलत, इसका निर्णय बुद्धि से करना।

7.शम (मन का संयम): अपने मन को भटकने से रोकना और उसे वश में रखना।

8.दम (इंद्रियों का संयम): अपनी ज्ञानेंद्रियों और कर्मेंद्रियों पर नियंत्रण रखना।

9.अहिंसा: मन, वचन या कर्म से किसी भी प्राणी को कष्ट न पहुंचाना।

10.ब्रह्मचर्य: अपनी ऊर्जा को ऊर्ध्वगामी बनाना और वासनाओं से दूर रहना।

मानसिक और व्यावहारिक गुण

11.त्याग: दूसरों की भलाई के लिए अपनी प्रिय वस्तुओं का परित्याग करना।

12.स्वाध्याय: वेद-पुराणों और धार्मिक ग्रंथों का नियमित अध्ययन करना।

13.सरलता: कपट और चालाकी से दूर रहकर सीधा व निष्कपट व्यवहार करना।

14.संतोष: जो कुछ भी ईमानदारी से प्राप्त हो, उसी में खुश रहना।

15.समदर्शी महात्माओं की सेवा: सभी को समान रूप से देखने वाले संतों की सेवा करना।

16.निवृत्ति: सांसारिक भोगों और इच्छाओं की चेष्टा से धीरे-धीरे दूर होना।

17.अभिमान का त्याग: अहंकार और घमंड की भावना को छोड़ना।

18.मौन: व्यर्थ की बातों से बचकर चुप रहना और केवल आवश्यक बोलना।

19.आत्म-चिंतन: स्वयं के स्वरूप और ईश्वर का निरंतर विचार करना।

20.अन्न आदि का दान: भूखे और जरूरतमंद प्राणियों को भोजन व सामग्री का यथायोग्य हिस्सा देना।

आध्यात्मिक और भक्ति मार्ग (नवधा भक्ति)

21.सर्वत्र इष्टदेव का भाव: चराचर जगत के सभी प्राणियों में अपने आराध्य देव को देखना।

22.संतों के परम पद का आश्रय: महापुरुषों के दिखाए मार्ग पर चलना।

23.श्रवण: भगवान के नाम, गुण और लीलाओं को ध्यानपूर्वक सुनना।

24.कीर्तन: भगवान के नाम और महिमा का गान करना।

25.स्मरण: ईश्वर का निरंतर ध्यान और याद बनाए रखना।

26.सेवा: भगवान और उनके भक्तों की सेवा करना।

27पूजा: शास्त्रीय विधि से भगवान का अर्चन-पूजन करना।

28.नमस्कार: प्रभु के चरणों में पूरी श्रद्धा से प्रणाम करना।

29.दास्य: भगवान के प्रति सेवक (दास) का भाव रखना।

30.सख्य और आत्म-समर्पण: भगवान को अपना परममित्र मानना और स्वयंको पूरी तरह उन्हें सौंप देना।

शास्त्रों के अनुसार, यदि कोई मनुष्य इन 30 लक्षणों में से कुछ का भी पूरी निष्ठा से पालन करता है, तो शेष लक्षण उसके भीतर स्वत: ही जाग्रत होने लगते हैं। यह सभी मनुष्यों के लिए परम धर्म है इस 30 लक्षण वाले धर्म के पालन से सबके आत्मरूप भगवान प्रसन्न होते हैं। जिस संस्कृति में धर्म के 30 लक्षण हो उससे जगत का कोई भी प्राणी कैसे दु:खी हो सकता है। सनातन संस्कृति में इससे बढ़कर धर्म की प्रधानता क्या हो सकती है

(7) धार्मिक सहिष्णुता

हमारी संस्कृति सनातन है, हमारा धर्म सनातन है तथा उच्च स्थिति में मत-मतान्तर तथा धर्म भेद नहीं है क्योंकि आदि धर्म ईश्वर द्वारा प्रतिपादित है तथा मानव का कल्याण किस विधि से हो इस हेतु यह धर्म है। ईश्वर एक है, उसके द्वारा प्रतिपादित धर्म अनेक नहीं हो सकते। संसार में किसी भी धर्म की अच्छाइयां हिंदू धर्म से अलग नहीं हो सकती। इस कारण हमारी संस्कृति में किसी भी धर्म के प्रति द्वेष भाव नहीं है। संसार के अन्य धर्मो का समय-समय पर प्रयास रहता है कि अपने-अपने धर्म के मानने वालों की संख्या में बढ़ोतरी की जाए। इसके लिए वे सभी तरह के प्रलोभन आदि देकर या तलवार के जोर से धर्म परिवर्तन करवाते हैं लेकिन सनातन संस्कृति में ऐसे प्रयासों को कोई स्थान नहीं है। हम अच्छी प्रकार से समझते हैं कि धर्म क्या है? मनुष्य का कल्याण धर्म के पालन से होगा धर्मातरण से नहीं। अत: हमें अन्य धर्म के प्रति राग द्वेष न करके सच्चे धर्म का पालन करना चाहिए। क्योंकि अपने कर्तव्य का पालन करने वाले का कल्याण ईश्वरीय नियमों से होता है। न तो झगड़ा दंगा फसाद करके अपने धर्म को ऊपर उठाए जा सकता है और न ही ऐसा करके व्यक्ति स्वयं को ऊपर उठा सकता है। सनातन धर्म में इतनी सहिष्णुता है कि भारत में हर धर्म के लोग आकर बसे और हम उनके साथ घुलमिल गये। सनातन धर्मावलम्बियों हमेशा सहिष्णु रहे हैं तथा इतिहास गवाह है कि हमने कभी किसी बाहरी संस्कृति को मिटाने का प्रयास नहीं किया, बल्कि हमेशा उन्हें गले लगाया।

सदियों से जब भी दुनिया के किसी कोने में धर्म या जाति के नाम पर अत्याचार हुआ, उन प्रताड़ित लोगों को भारत और सनातनियों ने सहर्ष आश्रय दिया। ईरान से भगाये गये पारसी हो या रोमन अत्याचारों से पीड़ित यहूदी हों उन्हें भारत में न केवल सुरक्षित स्थान मिला बल्कि अपने धर्म के पालन की पूरी स्वतंत्रता मिली। भारत में सनातन धर्म को मानने वालों ने कभी किसी बाहरी व्यक्ति या समुदाय को उनके धर्म, भाषा या पूजा पद्धति के आधार पर अपने से अलग या अछूता नहीं माना। सनातनियों ने अपने पूरे इतिहास में कभी भी किसी दूसरे देश पर अपनी संस्कृति या धर्म को थोपने के लिये कोई हिंसक आक्रमण नहीं किया। सनातन धर्म ने यहाँ आने वाले हर धर्म के लोगों को सहन किया।.....लगातार

संस्था समाचार

श्री सुरभि हरिहर चातुर्मास आराधना महोत्सव हेतु जगद्गुरु शंकराचार्य प. पूज्य श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज को दिया गया सादर निमंत्रण

रेवदर। परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री, संस्थापक श्री गोधाम महातीर्थ पथमेडा की पावन प्रेरणा से अभिनव ब्रजमंडल में आयोजित होने वाले श्री सुरभि हरिहर चातुर्मास आराधना महोत्सव के लिए जगद्गुरु शंकराचार्य शारदा पीठाधीश्वर श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज को विधिवत निमंत्रण अर्पित किया गया।

इस अवसर पर पूज्य महंत श्री अरूपानंदगिरीजी महाराज, पूज्य श्री गोविंदवल्लभदासजी महाराज, पूज्य श्री योगेशदासजी महाराज, पूज्य श्री रामरतनदासजी महाराज एवं पूज्य श्री बलदेवदासजी महाराज के नेतृत्व में न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंह राजपुरोहित, केंद्रीय महामंत्री श्री अर्जुनसिंहजी अंकलेश्वर, केन्द्रीय गोग्रास संकलन मंत्री श्री बलवंतराजजी राजगुरु, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (सीईओ) श्री आलोक सिंहल सहित अनेक गोभक्त एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

प्रतिनिधिमंडल द्वारा महाराजश्री की ओर से जगद्गुरु शंकराचार्यजी को प्रणामपूर्वक निमंत्रण पत्रिका, शॉल, शगुन, पूज्य प्रतिमा, स्मृति चिन्ह, ऑर्गेनिक फल तथा गो-दुग्ध से निर्मित मिष्ठान भेंट कर चातुर्मास महोत्सव में पधारने का विनम्र निवेदन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान पूज्यश्री गोविंदवल्लभदासजी महाराज ने परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री की ओर से जगद्गुरु शंकराचार्यजी को अभिनव ब्रजमंडल में पधारकर अपने दिव्य सान्निध्य से समस्त श्रद्धालुओं को कृतार्थ करने का भावपूर्ण आग्रह किया। न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंह जी राजपुरोहित ने निमंत्रण पत्र का वाचन करते हुए चातुर्मास आराधना महोत्सव की रूपरेखा एवं आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डाला।

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री आलोक जी सिंहल द्वारा कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री गोधाम महातीर्थ पथमेडा द्वारा संचालित गोसंवर्धन, गोसेवा, प्राकृतिक कृषि, सनातन संस्कृति संरक्षण एवं राष्ट्र निर्माण के विविध आयामों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई।

इस अवसर पर जगद्गुरु शंकराचार्य पूज्य श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज ने अपने आशीर्वचन प्रदान करते हुए श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा गोसेवा, धर्मरक्षा एवं सनातन संस्कृति के संरक्षण के लिए किये जा रहे कार्यो की सराहना की। उन्होंने श्री सुरभि हरिहर चातुर्मास आराधना महोत्सव हेतु अपनी मंगलमय स्वीकृति प्रदान करते हुए आयोजन की सफलता के लिए शुभाशीष प्रदान किए। उनके आशीर्वचनों से उपस्थित सभी संत, पदाधिकारी एवं श्रद्धालु भावविभोर हो उठे।

इस अवसर पर श्री महावीर हनुमान नंदीशाला गोलासन के अध्यक्ष राव श्री मोहनसिंहजी चितलवाना, संचालन समिति के अध्यक्ष श्री केवलारामजी पुरोहित, केन्द्रीय निदेशक श्रीब्रह्मदत्तजी राजपुरोहित, वरिष्ठ गोभक्त श्री धनराज जी चौधरी, श्री किशोर सिंह जी नेतरा, श्री मेघराज जी मोदी, श्री भरतसिंह जी बसंत, श्री मगनीरामभाई रावल, श्री खेताभाई दियोदर, श्री आलाभाई अहीर, श्री अमृतभाई, श्री घमारामजी खिरोड़ी, श्री केवाराम खिरोड़ी सहित अनेक गणमान्य श्रद्धालु उपस्थित रहे।

गो, गंगा, गीता और सनातन संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन का यह विराट आयोजन आगामी चातुर्मास में अभिनव ब्रजमंडल को एक दिव्य आध्यात्मिक केंद्र के रूप में स्थापित करेगा।

न्यास की केंद्रीय कार्यकारिणी की बैठक आयोजित

नंदगाँव। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के पावन सानिध्य में, अंतरराष्ट्रीय संरक्षक पूज्य परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानंदजी महाराजजी की मंगल उपस्थिति एवं कार्यकारी प्रधान संरक्षक पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराजजी के सभापतित्व में दिनांक 23/6/2026 मध्याह्न 1.30 बजे से अभिनव ब्रजमंडल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगांव में न्यास की केंद्रीय कार्यकारिणी की ऑनलाईन बैठक आयोजित की गई। आयोजित इस ऑनलाईन बैठक में न्यास द्वारा प्रत्यक्ष संचालित गोशालाओं में विराजमान गोवंश की विधिवत सेवा हेतु उच्च गुणवत्तायुक्त औषधियों, घास चारा, पौष्टिक आहार आदि की आपूर्ति सुनिश्चित करने, आवश्यक गोआवासों के निर्माण एवं योग्य गोसेवकों की सुविधा के लिए प्रयत्न करने की सहमति बनी। गोमाताओ से प्राप्त गोमय, गोमूत्र एवं गोदुग्ध उत्पादन, संकलन, परिष्करण तथा वितरण पर चर्चा के दौरान न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंहजी राजपुरोहित ने सुझाव दिया कि वर्तमान में तैयार सीबीजी प्लांट से गैस एवं खाद उत्पादन को बढाना चाहिए जिससे गौशाला की आय में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सके।

इसी प्रकार श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा प्रबंधन के लिए गत माह का आय व्यय विवरण, लेखा-जोखा सदन में प्रस्तुत हुआ, जिसको चर्चा के बाद में अनुमोदित किया गया। सदन में गोसेवा उपकरणो के उपयोग, आगंतुक श्रद्धालुओं के सत्कार, गोदर्शन, पूजन, आवास, भोजन आदि उत्तम व्यवस्थाओ हेतु सुझाव और मार्गदर्शन प्राप्त हुए।

वैदिक गो उत्पाद फाऊंडेशन द्वारा वेदलक्षणा पंचगव्यावेंद औषधियों, गोकृषि अन्न तथा गोदुग्धान्न के संकलन, परिष्करण, विनिर्माण एवं विपणन बढ़ाने के लिए सभी मिलकर प्रयास करें ऐसा विचार हुआ। कमलेशजी ने कहा कि स्टोर उचित लोकेशन्स में हो एवं केनोपी एक जैसी होनी चाहिए। यशपालजी गुप्ता ने सुझाव दिया कि वैदिक गो उत्पाद फाऊंडेशन द्वारा तैयार गोघृत आदि पंचगव्य उत्पादों के विज्ञापन देने चाहिए। वैद्य मनोजजी ने कहा कि अभिनव ब्रजमंडल परिसर में इसका पायलट प्रोजेक्ट लगाया जायेगा और आनलाईन विक्रय को गति दी जायेगी।

गो समृद्धि एफ पी ओ एवं जेटा फार्म द्वारा घास चारा, अनाज, सब्जियों, फल, फूल आदि के उत्पादन के विषय में न्यास के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी आलोकजी सिंहल द्वारा विस्तृत भूमिका प्रस्तुत की गई। विपिनजी जालान ने स्थानीय किसानों से गो आधारित कृषि कराने का सुझाव दिया जिस पर सहर्ष सर्वसम्मति बनी।

श्री गो गोपाल सनातन संस्कृति महामंदिर, श्री गो गोपालजी दैनिक उत्सव संपादन एवं मन्दिर निर्माण कार्य के विषय में आलोकजी सिंहल द्वारा श्री गोगोपाल महामंदिर की सेवाओं का आय व्यय विवरण प्रस्तुत किया गया। महामंदिर मॉडल बनाने की सहमति चाही गई, जिसका सर्वसम्मति से अनुमोदन हुआ। निर्माण समिति के भागचंदजी नांगल ने निर्माण संबंधित जानकारी प्रदान की।

सुरभि आरोग्यकुलम् में श्री धनराजजी चौधरी ने लेब चालू करने का सुझाव दिया। श्री रघुनाथसिंहजी ने तब तक अन्यत्र लेब जांच कराने का सुझाव प्रदान किया। आरोग्यकुलम् के मुख्य चिकित्साधिकारी मनोजजी ने अगले दस दिनों में लेब चालू करने का वचन दिया।

सुरभि हरिहर चातुर्मास आराधना महोत्सव में सनातन धर्म प्रेमियों की अधिकाधिक सहभागिता सुनिश्चित करने, उत्सव मनाने, साधु-संतों एवं अतिथियों के आवास सम्बन्धी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने हेतु आलोकजी सिंहल ने अभी तक हुई तैयारियों से अवगत कराया एवं 12 जुलाई को होने वाले चातुर्मास कार्यकर्ता संगोष्ठी की सूचना सभी जगह प्रसारित करने हेतु निवेदन किया।

श्री सुरभि हरिहर चातुर्मास आराधना महोत्सव की तैयारियों को लेकर अभिनव ब्रजमण्डल में आयोजित हुई गोभक्त कार्यकर्ताओं की बैठक

नंदगांव में चातुर्मास को लेकर तैयारियां तेज, आठ जिलों की समितियों का गठन

द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य सहित देशभर के संतों का होगा समागम

चातुर्मास महोत्सव को लेकर नंदगांव में मंथन, 30 हजार से अधिक श्रद्धालुओं को भेजे जायेंगे निमंत्रण

नंदगांव बनेगा संत समागम का केंद्र, शंकराचार्य के स्वागत की तैयारियां शुरू

गोभक्तों को मिलेगी जिला, तहसील और ग्राम स्तर तक की जिम्मेदारियों

रेवदर। अभिनव ब्रजमंडल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगांव में आगामी चातुर्मास महोत्सव की तैयारियों को लेकर परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज के पावन सानिध्य में अभिनव ब्रजमण्डल में दिनांक 15 जून को गोभक्त कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में चातुर्मास के दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों एवं व्यवस्थाओं पर विस्तार से चर्चा की गई तथा मनोरथियों के नामों की घोषणा भी की गई।

महाराजश्री ने सिरोही सहित आसपास के क्षेत्रों के गोभक्तों से चातुर्मास की तैयारियों में प्रत्यक्ष रूप से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने विभिन्न सेवाओं और व्यवस्थाओं के लिए गोभक्तों को अलग-अलग जिम्मेदारियां भी सौंपीं।

बैठक में सिरोही, जालोर, बनासकांठा, पाली, बाड़मेर, उदयपुर, राजसमंद, जोधपुर सहित 8 जिलों के गोभक्तों की समितियों का गठन किया गया जो अपने-अपने क्षेत्रों में आयोजन की तैयारियों और जनसंपर्क का कार्य संभालेंगी।

गोऋषिजी महाराज ने बताया कि द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज के नंदगांव आगमन मार्ग पर प्रमुख स्थानों पर भव्य स्वागत की व्यवस्था की जाएगी। साथ ही ट्रस्टियों एवं गोभक्तों को आयोजन की पत्रिकाओं के वितरण की जिम्मेदारी सौंपी गई है। उन्होंने बताया कि 20 हजार से अधिक श्रद्धालुओं को डाक के माध्यम से निमंत्रण पत्र भेजे जा चुके हैं तथा 10 हजार गोभक्तों डाक से और निमंत्रण भेजे जायेंगे। गोभक्त कार्यकर्ताओं द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में पीले चावल देकर भी पारंपरिक रूप से आमंत्रण दिया जाएगा।

बैठक में पूज्य संत श्री चेतननाथजी वनाई, पूज्य संत श्री ऋषिचौतन्यजी महाराज, पूज्य संत श्री नेमीनाथजी महाराज दुगावा, पूज्य संत श्री नंदरामदासजी महाराज, पूज्य संत श्री बलदेवदासजी महाराज एवं पूज्य संत श्री गोपालदासजी महाराज सहित वरिष्ठ ट्रस्टी श्री ब्रह्मदत्त जी पुरोहित, श्री धनराज जी चौधरी, सी ई ओ श्री आलोक जी सिंहल, श्री किशोरसिंह जी नेतरा, श्री मेघराज जी मोदी, श्री केवलाराम जी पुरोहित, ठाकुर श्री हरिसिंह जी केसुआ, श्री रणछोड़ जी पुरोहित, श्री बद्रीदान जी चारण, श्री शिवनाथसिंह जी, श्री मंगनीरामजी रावल, श्री अमृत भाई, डॉ. उदाराम जी वैष्णव, श्री डूंगर सिंहजी राजपुरोहित, श्री आशारामजी देवड़ा, श्री बलरामजी चौधरी, श्री मोहन भाई जाधव, श्री अम्बा लाल सुथार सम्पादक, सहित बड़ी संख्या में गोभक्त मौजूद रहे।

अभिनव ब्रजमण्डल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगाँव में दिनांक 16 जनवरी 2026 को आयोजित श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास की श्री सुरभि संसद के अर्द्धवार्षिक अधिवेशन में पूज्य प्रधान संरक्षक जी द्वारा नवगठित सुरभि प्रज्ञा परिषद और केन्द्रीय कार्यकारिणी की सूचियें यहाँ दी जा रही है:

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास

सुरभि प्रज्ञा परिषद

क्रं.सं.	गोभक्त का नाम	निवासी	प्रवासी
	प.पू.जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री सदानंदजी सरस्वती जी महाराज	शारदापीठ द्वारका	
	पू. महन्त स्वामी श्री राजेन्द्रदासदेवाचार्यजी महाराज	श्रीधाम वृन्दावन	
	पू. परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानंदजी महाराज	जगन्नाथ पुरी	
	पू.महंत श्री रामप्रवेशदासजी महाराज	वृन्दावन	
	पू.महंत श्री चेतनानंदजी महाराज	डण्डाली	
	पू.महंत श्री दिनेशगिरीजी महाराज	श्रीबुधगिरी मढी, फतेहपुर	
	पू.स्वामी प्रखरजी ब्रह्मचारी महाराज	हरिद्वार	
	पू.संत श्री रामरतनदासजी महाराज	टेंटोडा	
	पू.संत श्री गोविंदवल्लभदासजी महाराज	श्रीपतिधाम सिरोही	
	पू.महंत श्री योगेशदासजी महाराज	अहमदाबाद	
	पू.महंत श्री रविन्द्रानंदजी महाराज	हरिद्वार	अभिनव ब्रजमण्डल
	पू.संत श्री रघुनाथभारतीजी महाराज	सिणधरी	
1	श्री राजकुमारजी अग्रवाल	जमशेदपुर	
2	श्री प्रदीपजी बंसल	मथुरा	मुम्बई
3	श्री सुरेशजी राजपुरोहित	मादा	दिल्ली
4	गो उपासक पंडित गंगाधरजी पाठक	वृन्दावन	
5	पंडित श्री राजेन्द्रजी अंणथवाल	देहरादून	
6	श्री सुखरामजी विश्नोई	केरिया	सांचोर
7	श्री अशोककुमारजी कोठारी	भीलवाड़ा	
8	श्री सुशीलजी ओझा	कोलकाता	
9	श्री धनराजजी चौधरी	देवली कला	जोधपुर
10	डॉ. वीरेन्द्रजी गर्ग	दिल्ली	
11	श्री राजीवजी गुप्ता	लखनऊ	देहरादून
12	राव मोहनसिहजी चौहान	चितलवाना	
13	श्री देवारामजी जागरवाल	कैलाशनगर	
14	श्री सत्यनारायणजी राजपुरोहित	चम्पाखेड़ी गोग्रास संकलन प्रभारी	
15	श्री श्रवणसिंहजी राव	बोरली	सांचोर
16	गो उपासक डॉ बालकृष्णजी कौशिक	सरदार शहर	
17	श्री मालारामजी राजपुरोहित	मणोरा	सूरत

18	श्री किशोरसिंहजी राजपुरोहित	नेतरा	सूरत
19	श्री मांगीलालजी पारीक	दिल्ली	
20	श्री विनोदजी अग्रवाल	सुरत	
21	श्री मुरलीमनोहरजी पलोड़	हैदराबाद	
22	श्री शम्भुप्रसादजी अग्रवाल	कोलकाता	
23	श्री नंदकिशोरजी अग्रवाल	दिल्ली	
24	ठाकुर हरिसिंहजी देवड़ा	केसुआ	
25	श्री सुभाषजी जोड़ीवाल	अहमदाबाद	
26	श्री आनंदजी अग्रवाल	अहमदाबाद	
27	श्री मुकेशजी चाचाण	अहमदाबाद	
28	श्री राकेशजी कंसल	सूरत	
29	श्री विनोदजी अग्रवाल	अहमदाबाद	
30	श्री बालमुकुंदजी अग्रवाल	अहमदाबाद	
31	श्री केशारामजी सुथार	सिद्धेश्वर	सांचोर
32	श्री प्रवीणकुमारजी पुरोहित	पालड़ी	सांचोर
33	श्री हरिभगवानजी बंग	राजसमन्द	
34	श्री राजेशचेतनजी अग्रवाल	दिल्ली	
35	श्री भूरारामजी पुरोहित	नानरवाडा	आबूरोड़
36	श्री डूंगरारामजी पुरोहित	बिछावाड़ी	विरोल
37	श्री तुलसीरामजी राजपुरोहित	मणोरा	सूरत
38	श्री शंकरसिंहजी राजपुरोहित	दारनडी की ढाणी	हैदराबाद
39	श्री अर्जुनसिंहजी राजपुरोहित	फूलासर	जोधपुर
40	श्री स्वतंत्रजी शर्मा	जम्मु	
41	श्री कैलाशकुमारजी राजपुरोहित	सांथु प्रकल्प निर्देशक नंदगांव	हुबली
42	श्री आनंदजी जालान	दिल्ली	
43	श्री सारंगपाणीजी जालान	सूरत	
44	श्री गोरांगजी अग्रवाल	कोलकाता	
45	श्री देवेन्द्रजी जैन	दिल्ली	
46	श्री चंदनसिंहजी चौहान	विरोल	
47	श्री सावंरमलजी गोयल	दिल्ली	
48	श्री रघुनाथजी माली	सिरोही	
49	डॉ. उदारामजी वैष्णव	सांचोर	
50	श्री राणमलजी राजपुरोहित	मादा	सूरत
51	श्री विशनसिंहजी राजपुरोहित	सांथु	दिल्ली
52	श्री धूपसिंहजी राजपुरोहित	अरणु	
53	श्री गुमानसिंहजी राजपुरोहित	नून	चैन्नई

54	श्री खंगारजी राजपुरोहित	खिरोड़ी	मुम्बई
55	श्री महावीरसिंहजी राजपुरोहित	चम्पाखेड़ी	पांडुचेरी
56	श्री गोपालजी शाह	नड़ियाद	
57	श्री सुनिलजी जागेटिया	भीलवाडा	
58	श्री ओमप्रकाशजी मंत्री	राजसमन्द	
59	श्री मोडारामजी राजपुरोहित	बागावास	मैसूर
60	श्री बिहारीलालजी राजपुरोहित	बसन्त	सूरत
61	श्री महादेवभाई पटेल	धांगध्रा	
62	श्री प्रेमराजजी राजपुरोहित	नानरवाड़ा	अहमदाबाद
63	श्री भगराजजी राजपुरोहित	नून	बैंगलोर
64	श्री जेठूसिंहजी राजपुरोहित	बासनी मनणा	कानपुर
65	श्री अजयजी अग्रवाल	महोली, सीतापुर	
66	श्री जयसिंहजी राजपुरोहित	बैरठ	
67	श्री धुखसिंहजी राजपुरोहित	सांकरणा	
68	श्री नरेन्द्रसिंहजी राजपुरोहित (AAG)	जोधपुर	
69	श्री सुभाषकुमारजी राजपुरोहित	ओटवाला	हैदराबाद
70	श्री मंगलजी राजपुरोहित	बागरा	मैसूर
71	श्री गायड़रामजी देवासी	करमावास पट्टा	हैदराबाद
72	एडवोकेट सुमेरसिंहजी राजपुरोहित	रून्दिया	सिरोही
73	श्री मुलारामजी राजपुरोहित	रेवदर	
74	श्री देवारामजी राजपुरोहित	धोरीमन्ना	अहमदाबाद
75	श्री जयप्रकाशजी गुप्ता	दिल्ली	
76	श्री बलवन्तसिंहजी राजपुरोहित	सांकरणा समन्वयक आंध्रा	विजयवाड़ा
77	श्री जोगसिंहजी राजपुरोहित	बैरठ संयोजन मंत्री मदुराई	मदुराई
78	श्री सुरेशसिंहजी राजपुरोहित	शिवतलाव	वडोदरा
79	श्री संतोषसिंहजी राजपुरोहित	वणदार	धार
80	श्री आशारामजी पुरोहित	देवड़ा	
81	श्री गोवारामजी पुरोहित	मालवाड़ा	
82	श्री भरतसिंहजी राजपुरोहित	बसन्त	सूरत
83	श्री शैतानसिंहजी चौहान	बोरली	
84	श्री मगनीरामभाई रावल	मसाली	
85	श्री खेताभाई जोशी	देलवाडा	
86	श्री अमृतभाई जोशी	भाखरी	
87	श्री भलाभाई जोशी	राबड़ीपादर	
88	श्री डायाभाई माली	चिचोदरा	
89	श्री लाधारामजी राजपुरोहित	जेतपुरा	

90	श्री बाबुलालजी राजपुरोहित	जेतपुरा	बापला
91	श्री नवाजी राजपुरोहित	खिरोड़ी	मुम्बई
92	श्री संदीपजी पोद्दार	सूरत	सूरत
93	श्री हिन्दुसिंहजी चौहान	दुठवा	सांचोर
94	श्री नरेन्द्रजी चौधरी	भादरूणा	मुम्बई
95	श्री माधारामजी देवासी	रतोड़ा	मुम्बई
96	श्री दिनेशजी सैन	अरणाय	मुम्बई
97	श्री नारायणसिंहजी राजपूत	बावरला	मुम्बई
98	श्री गणपतजी राजपुरोहित	खिरोड़ी	मुम्बई
99	श्री सुरेशकुमारजी राजपुरोहित	बैरठ	मुम्बई
100	श्री मांगीलालजी	सांकरणा	
101	श्री प्रमोदजी राजपुरोहित	जसवन्तपुरा	मुम्बई
102	श्री बलवंतजी राजपुरोहित	रायपुरीया	मुम्बई
103	श्री अर्जुनसिंहजी राजपुरोहित	मोहराई	चैन्नई
104	श्री सुरेशकुमारजी राजपुरोहित	डुडसी	चैन्नई
105	श्री शिवसिंहजी राजपुरोहित	बडी सवाई	चैन्नई

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास

राष्ट्रीय कार्यकारिणी

क्रं.सं.	गोभक्त का ना	सेवा प्रभार	निवासी	प्रवासी
	पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज	कार्यकारी प्रधान संरक्षक	जोधपुर	
	पूज्य गोसंत श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज	केन्द्रीय समन्वयक	संगरिया	
	पूज्य गोसंत श्री नन्दरामदासजी महाराज	केन्द्रीय संयोजक	पथमेड़ा	
	पूज्य गोसंत श्री बलदेवदासजी महाराज	केन्द्रीय संरक्षक	पथमेड़ा	
	पूज्य गोसंत श्री ऋषि चैतन्यजी महाराज	केन्द्रीय समन्वयक	पथमेड़ा	
1	श्री राकेशजी बिंदल	राष्ट्रीय अध्यक्ष	दिल्ली	
2	श्री रघुनाथसिंहजी राजपुरोहित	कार्यकारी अध्यक्ष	शिवतलाव	पाली
3	श्री सत्यनारायणजी बंसल	वरिष्ठ उपाध्यक्ष	दिल्ली	
4	श्री अर्जुनसिंहजी राजपुरोहित	राष्ट्रीय महामंत्री	तिवरी	अंकलेश्वर
5	श्री ओमप्रकाशजी गर्ग	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	बालोतरा	
6	श्री मुरलीधरजी तोषनीवाल	राष्ट्रीय सहकोषाध्यक्ष	राजसमंद	
7	श्री शिवनाथसिंहजी राजपुरोहित	केन्द्रीय संगठन मंत्री	बासड़ा धनजी	
8	श्री रमाकान्तजी बेरीवाल	केन्द्रीय प्रचार मंत्री	कलकत्ता	
9	श्री ललितजी अग्रवाल	केन्द्रीय आयोजन मंत्री	अहमदाबाद	
10	श्री प्रतापजी राजपुरोहित	उपाध्यक्ष गोभक्त	जेतपुरा	मुम्बई
11	श्री अम्बा लाल जी सुथार	गोसेवा महानिर्देशक	कारोला	

12	श्री केवलारामजी पुरोहित	संयुक्त निदेशक	पालड़ी	सांचोर
13	श्री डुंगरसिंहजी राजपुरोहित	उपाध्यक्ष गोभक्त	बासनी	लुधियाना
14	श्री श्यामसुन्दरजी जोड़ीवाल	संयोजन मंत्री अहमदाबाद	अहमदाबाद	
15	श्री नरेन्द्रजी राजपुरोहित	निर्माण निरीक्षण मंत्री	धानोल	वसई
16	श्री ब्रह्मदत्तजी राजपुरोहित	केन्द्रीय निर्देशक	नानरवाड़ा	
17	श्री मेघराजजी मोदी	आपूर्ति मंत्री	मेड़ा जागीर	सांचोर
18	श्री सत्यभूषणजी जैन दिल्ली	उपाध्यक्ष दिल्ली	दिल्ली	
19	श्री आलोकजी सिंहल	मु. प्रशासनिक अधिकारी	बाड़मेर	नंदगांव
20	श्री घेवरचंदजी राजपुरोहित	वित्त विनिमय मंत्री	बिलड़	अहमदाबाद
21	श्री नटवरजी राजपुरोहित	उपाध्यक्ष गोभक्त	पोसितरा	मुम्बई
22	श्री चम्पालालजी राजपुरोहित	संयोजक मंत्री तेलंगाना	सायला	हैदराबाद
23	श्री बलवन्तजी राजपुरोहित	गोग्रास अभियान मंत्री	अणखोल	बैंगलोर
24	श्री सोनारामजी माली	संयोजक मंत्री आन्ध्रा	कैलाशनगर	विजयवाड़ा
25	श्री भागचंदजी नागल	निर्माण कार्य मंत्री	किशनगढ़	
26	श्री प्रमोदजी कंसल	समन्वयक सूरत	सूरत	
27	श्री लालसिंहजी राजपुरोहित	संयोजक मंत्री सूरत	रणधीसर	सूरत
28	श्री मांगीलालजी राजपुरोहित	प्रचार प्रसार मंत्री सूरत	चाटेलरव	सूरत
29	श्री अंजनीकुमारजी गुप्ता	समन्वयक अहमदाबाद	अहमदाबाद	
30	श्री जसराजजी सिद्धप	गोग्रास संकलन मंत्री	वाली	
31	श्री हाजाजी राजपुरोहित	समन्वयक मुम्बई	हिण्डवाड़ा	मुम्बई
32	श्री किरणसिंहजी राजपुरोहित	प्रचार-प्रसार मंत्री मुम्बई	चिरपटिया	मुम्बई
33	श्री संजयजी गर्ग	संपर्क मंत्री दिल्ली	दिल्ली	
34	श्री लक्ष्मणसिंहजी राजपुरोहित	समन्वयक मंत्री तेलंगाना	चम्पाखेड़ी	हैदराबाद
35	श्री चतरारामजी राजपुरोहित	सम्पर्क मंत्री मुम्बई	जूनी वाली	मुम्बई
36	श्री हीरालालजी राजपुरोहित	संयोजन मंत्री बैंगलोर	बागरा	बैंगलोर
37	श्री प्रदीपकुमारजी जागरवाल	प्रचार-प्रसार मंत्री	कैलाशनगर	बैंगलोर
38	श्री जबरारामजी राजपुरोहित	समन्वयक बैंगलोर	पुर	बैंगलोर
39	श्री महेन्द्रजी राजपुरोहित	संपर्क मंत्री बैंगलोर	घासेड़ी	बैंगलोर
40	श्री ललितजी राजपुरोहित	संयोजन मंत्री चैन्नई	रोपसी	चैन्नई
41	श्री भरतजी राजपुरोहित	समन्वयक चैन्नई	बासड़ाधनजीचैन्नई	
42	श्री विकासजी राजपुरोहित	संपर्क मंत्री चैन्नई	पांचलोडिया	चैन्नई
43	श्री नरपतजी राजपुरोहित	प्रचार-प्रसार मंत्री	रेवतड़ा	चैन्नई
44	श्री सांवलसिंहजी राजपुरोहितगो	ग्रास संकलन मंत्री	बागावास	ऐरनाकुलम
45	श्री कैलाशजी राजपुरोहित	समन्वयक मंत्री राज.	उदयपुर	
46	श्री शत्रुघ्नसिंहजी राजपुरोहित	संयोजक मंत्री जोधपुर	अराबा	जोधपुर
47	श्री आलोकजी जगवायन	संपर्क मंत्री दिल्ली	दिल्ली	

48	श्री राजीवजी केजरीवाल	प्रचार प्रचार मंत्री दिल्ली	दिल्ली	
49	श्री नरेन्द्रसिंहजी राजपुरोहित	समन्वयक मंत्री जोधपुर	बारवा	जोधपुर
50	श्री रणछोड़जी राजपुरोहित	आपूर्ति मंत्री	रेवदर	
51	श्री श्रवणसिंहजी राजपुरोहित	संयोजन मंत्री हरियाणा	नारवा	गुड़गांव
52	श्री मनमोहनजी जाजोदिया	संयोजन मंत्री उतर प्रदेश	गोरखपुर	
53	श्री ओमप्रकाशजी विश्नोई	प्रचार प्रसार मंत्री राज.	कुकावास	भीनमाल
54	श्री दिनेशभाई पटेल	प्रचार-प्रसार मंत्री उत्तर गुज.	रतनगढ़	
55	श्री कमलेश भाई	संपर्क मंत्री उतर गुज.	महाजनपुरा	थराद
56	श्री रणछोड़रामजी दर्जी	प्रचार मंत्री अहमदाबाद	सिणधरी	अहमदाबाद
57	श्री जबरारामजी राजपुरोहित	सम्पर्क मंत्री मुम्बई	खिरोड़ी	मुम्बई
58	श्री नरेशजी राजपुरोहित	प्रचार मंत्री मुम्बई	तांतड़ा	मुम्बई
59	श्री जयन्तिलालजी राजपुरोहित	समन्वयक मुम्बई	आमपुरा	वसई
60	श्री बद्रीदानजी चारण	सम्पर्क मंत्री जालोर	नरपुरा	

गोशाला में पहली बार होगा शंकराचार्य महाभाग का चातुर्मास, 29 जुलाई से 26 सितंबर तक होगा यह भव्य आयोजन

संस्थान की ओर से सीओ आलोक जी सिंहल के नेतृत्व में जैसलमेर, बाड़मेर सांचोर, सूरत और अहमदाबाद में आयोजित की गई प्रेस क्रांफ्रेस

पथमेड़ा। विश्व प्रसिद्ध गोसेवी संस्थान श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की किसी गोशाला के प्रांगण में जगद्गुरु शंकराचार्य महाभाग के सान्निध्य में पहली बार चातुर्मास आराधना महोत्सव आयोजित होगा। यह आयोजन 29 जुलाई से 26 सितंबर तक चलेगा, जिसमें देशभर से लाखों गोभक्तों के पहुँचने की संभावना है। संस्थान के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज की प्रेरणा से आयोजित होने वाले सुरभि हरिहर चातुर्मास आराधना महोत्सव का आयोजन सहस्त्रों गोमाताओं के मध्य **अभिनव ब्रजमंडल मनोरमा गोलोकतीर्थ अर्बुदारण्य** की पावन धरा पर किया जाएगा।

संस्थान के सीईओ आलोक सिंहल के नेतृत्व में जैसलमेर, बाड़मेर, सांचोर, सूरत, अहमदाबाद आदि शहरों में प्रेस क्रांफ्रेस आयोजित कर बताया कि जगद्गुरु शंकराचार्य महाभाग पूज्य स्वामी श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज, शारदा पीठाधीश्वर द्वारिका के पावन सानिध्य में पहली बार किसी गोशाला में चातुर्मास का आयोजन होने जा रहा है। इसे गोसेवा और सनातन संस्कृति के लिये ऐतिहासिक अवसर माना जा रहा है।

चातुर्मास के दौरान श्रीमद्भागवत कथा, श्रीरामचरितमानस कथा, नानी बाई का मायरा, श्री शिव महापुराण कथा, श्री हरिहर भक्तमाल कथा, गो भक्तमाल कथा सहित कुल सात कथाओं का आयोजन होगा। इसके साथ ही विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन भी किया जाएगा।

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

श्री सुरभ्यै नमः

सुरभि हरिहर चातुर्मास में होने वाले दैनिक कार्यक्रम

सुरभि हरिहर महापूजन
प्रातः 07 बजे से

हरिहर कथा सत्संग
मध्याह्नः 1:30 बजे से 04:30 बजे तक

परम पूज्य शंकराचार्यजी की पावन सन्निधि में
श्री जगद्गुरुजी की पादूका पूजन
प्रातः 09:00 बजे से

माण्डूक्य उपनिषद् एवं गौड़पादीय कारिका पर स्वाध्याय
प्रातः 10 से 12:00 बजे तक

गो गोवर्धन आरती एंव हरिनाम संकीर्तन
सायंः 07:30 बजे से

वेदलक्षणा गोमहिमा धर्मोपदेश
प. पू. जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी
श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज
प्रतिदिन सायंः 4:30 से 06:00 बजे तक

हरिहर कथा सत्संग

श्री मद् भागवत कथा — पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज
29 जुलाई से 05 अगस्त तक

नानी बाई का मायरा — गोवत्स श्री दिव्यांशुजी
06 अगस्त से 10 अगस्त तक

श्री राम कथा — पूज्य श्री दयानंदजी शास्त्री
11 अगस्त से 18 अगस्त तक

श्री हरिहर भक्तमाल — पूज्य श्री गौरदासजी महाराज
19 अगस्त से 27 अगस्त तक

श्री गोभक्त माल कथा — पूज्य श्री भरतशरणजी महाराज
29 अगस्त से 04 सितम्बर तक

श्री शिव–महापुराण कथा — पंडित श्री किशोरचन्द्रजी
05 सितम्बर से 11 सितम्बर तक

श्रीमद् भागवत कथा — प. पू. जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज
19 सितम्बर से 25 सितम्बर तक

लाईव प्रसारण

Shri Godham Mahateerth Pathmeda

कुल पृष्ठ-36
जुलाई 2026
प्रकाशन तिथि : 01 जुलाई 2026
कामधेनु कल्याण 20 रुपए
RNI Reg. No.- RAJHIN/2022/17167
Postal Reg. No.- RJ/SRO/9681/2025-2027

चातुर्मास्यव्रतानुष्ठान

चातुर्मास्यं यतीनाञ्च यः कारयति धर्मवित् । स फलं लभते सम्यक् राजसूयाश्वमेधयो ॥

(दिनांक 29 जुलाई 2026 से 26 सितम्बर 2026 पर्यन्त)

पावन सान्निध्य

अनंत श्रीविभूषित पश्चिमाम्नाय सामवेदीय,
द्वारका शारदापीठाधीश्वर
प. पू. जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी
श्री सदानंद सरस्वतीजी महाराज

वेदलक्षणा
श्री गोधाम महातीर्थ पथमेडा

नित्योत्सव

रूद्राभिषेक	वेदान्त पाठ	नित्य प्रवचन
प्रातः 07 बजे से 09 बजे तक	प्रातः 10 बजे से 12:00 बजे तक	सायं: 05 बजे से 06:30 बजे तक

विशिष्ठोत्सव

-: वि.सं. 2083 आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा दिनांक : 29 जुलाई 2026 ★ गुरु-व्यास पूजा, चातुर्मास्य प्रारम्भ, गुरु पूर्णिमा
-: वि.सं. 2083 श्रावण अमावस्या दिनांक : 12 अगस्त 2026 ★ हरियाली अमावस्या
-: वि.सं. 2083 श्रावण शुक्ल तृतीया दिनांक : 15 अगस्त 2026 ★ स्वतंत्रता दिवस
-: वि.सं. 2083 श्रावण् शुक्ल सप्तमी दिनांक : 19 अगस्त 2026 ★ गोस्वामी तुलसीदास जयंती
-: वि.सं. 2083 श्रावण् शुक्ल पूर्णिमा दिनांक : 28 अगस्त 2026 ★ संस्कृत दिवस, श्रावणी उपाकर्म
-: वि.सं. 2083 भाद्रपद कृष्ण अष्ठमी दिनांक : 04 सितंबर 2026★ श्रीकृष्ण जन्माष्ठमी
-: वि.सं. 2083 भाद्रपद शुक्ल द्वितीया दिनांक : 13 सितंबर 2026★ श्रीवराह जयंती
-: वि.सं. 2083 भाद्रपद शुक्ल तृतीया दिनांक : 14 सितंबर 2026★ श्रीगणेश चतुर्थी (हरितालिका)
-: वि.सं. 2083 भाद्रपद शुक्ल अष्ठमी दिनांक : 19 सितंबर 2026 ★ श्रीराधा अष्ठमी
-: वि.सं. 2083 भाद्रपद शुक्ल चर्तुदशी दिनांक : 25 सितंबर 2026★ अनन्त चतुर्दशी
-: वि.सं. 2083 भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा दिनांक : 26 सितंबर 2026★ चातुर्मास पूर्णाहुति महोत्सव

इस अमूल्य अवसर पर आप अपने परिवार एंव इष्ठ मित्रों के साथ उपस्थित रहते हुए, पूज्या गोमाता एंव अनन्तश्री विभूषित जगतगुरू शंकराचार्य महाराजश्री के दिव्य दर्शन व सतसंग एंव पावन सानिध्य का परम लाभ प्राप्त करें ।